

सुमन

33वां वार्षिक पत्रिका

कार्यालय प्रधान महालेखाकार
(लेखापरीक्षा-1), तमिलनाडू



SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थं सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest







संदेश



सुमन का तैंतीसवां अंक सौंपते हुए मुझे बेहद खुशी हो रही है। हिंदीतर भाषी क्षेत्र से हो रहा यह सराहनीय प्रयास, कार्यालयीन कर्मचारियों का हिंदी के प्रति उत्साहपूर्ण रवैये का जीवंत द्योतक है। गृहपत्रिका 'सुमन', भारतीय लेखा तथा लेखा-परीक्षा विभाग के अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा अपने संवैधानिक दायित्वों को आत्मसात कर, उन्हें सृजनात्मक रूप में ढालने का एक उभरता हुआ साक्ष्य है।

राष्ट्र-गरिमा एवं सर्जनात्मक भावना का सकारात्मक समन्वय कर, हिंदी भाषा के माध्यम से अपनी रचनात्मकता को उभारना वास्तव में एक प्रशंसनीय कार्य है। 'सुमन' के इस अंक के सफल प्रकाशन में अपना बहुमूल्य योगदान देने वाले सभी महानुभावों को हार्दिक बधाई एवं पत्रिका परिवार को उत्तरोत्तर प्रगति के लिए अनंत शुभकामनाएं।

फ.स

प्रधान महालेखाकार



संपादकीय



पृथ्वीपाल सिंह कानावत
वरिष्ठ उप महालेखाकार/प्रशासन

हमारे कार्यालय के सम्मानित सदस्यों के अमूल्य योगदान के फलस्वरूप, 'सुमन' गृहपत्रिका का यह तैंतीसवां अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत हर्ष और गौरव की अनुभूति हो रही है।

हिंदीतर क्षेत्रों में हिंदी साहित्य का सृजन और उसका प्रकाशन, हिंदी भाषा तथा भारत केसंविधान के प्रति हमारे गहरे सम्मान और राष्ट्रीय एकता की भावना को दर्शाता है। इस दृष्टि से, इस गृहपत्रिका का नियमित प्रकाशन अपने आप में ही अनुकरणीय उपलब्धि माना जा सकता है। अपनी उत्कृष्ट रचनाओं से इस अंक को सुशोभित करने वाले सभी रचनाकारों के प्रति मैं हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ। आप सभी को 'हिंदी पखवाड़े' की हार्दिक शुभकामनाएं।



सहायक निदेशक (राजभाषा) की लेखनी से



षिबी टी मांजूरान

स्वतंत्रता के बाद 14 सितंबर 1949 को संविधान सभा ने हिंदी को भारत की 'राजभाषा' के रूप में स्वीकार किया। आज के समय में हिंदी केवल भावनाओं की भाषा नहीं है, बल्कि यह शासन-प्रशासन और लोकतंत्र को मजबूत करने का एक सशक्त प्रशासनिक उपकरण भी है।

किसी भी लोकतांत्रिक देश में सरकार की नीतियां, कानून और योजनाएं तब तक सफल नहीं हो सकतीं, जब तक कि देश का आम नागरिक उन्हें अपनी भाषा में समझ न ले। जब कोई सरकारी आदेश, बजटीय घोषणा या लोक कल्याणकारी योजना (जैसे- किसान सम्मान निधि, शिक्षा के अधिकार से जुड़े दस्तावेज) हिंदी में तैयार किए जाते हैं, तो वह सीधे ग्रामीण और कस्बाई भारत तक पहुँचते हैं। इससे प्रशासनिक कार्यों में पारदर्शिता आती है और आम आदमी का तंत्र पर भरोसा बढ़ता है।

कार्यालयी हिंदी (प्रयोजनमूलक हिंदी) ने समय के साथ खुद को ढाला है। आज तकनीकी, विधि और बैंकिंग क्षेत्रों में हिंदी का प्रयोग लगातार बढ़ रहा है, जिससे विकास का लाभ समाज के अंतिम छोर पर बैठे व्यक्ति तक पहुँच पा रहा है।

हिंदी केवल शब्दों का समूह नहीं है; इसमें भारत की आत्मा, हमारे संस्कार, संतों की वाणी और स्वतंत्रता संग्राम का गौरवशाली इतिहास बसा है। चाहे सरकारी नीतियों को जनता तक पहुँचाने वाला कार्यालयी दस्तावेज हो या समाज को दिशा दिखाने वाली कोई पत्रिका, हिंदी हर रूप में हमारी सभ्यता और संस्कृति को आगे बढ़ा रही है। हिंदी केवल एक भाषा या संवाद का साधन नहीं है। यह भारतीय सभ्यता की संवाहक है। यह वह धागा है जिसमें भारत की सांस्कृतिक विविधता के खूबसूरत मोती पिरोए गए हैं।

आज के वैश्विक दौर में भी, जहाँ सूचना प्रौद्योगिकी और कृत्रिम बुद्धिमत्ता का बोलबाला है, हिंदी ने अपनी प्रासंगिकता को बनाए रखा है और इंटरनेट पर सबसे तेजी से बढ़ने वाली भाषाओं में से एक बनकर उभरी है। यह इसकी लचीली प्रकृति और इसके भीतर बसी 'भारत की आत्मा' के कारण ही संभव हो सका है। हिंदी हमारे अतीत के गौरव, वर्तमान की आवश्यकता और भविष्य के सपनों को खुद में समेटे हुए निरंतर आगे बढ़ रही है।

पत्रिका परिवार

मार्ग दर्शक

श्री फ्रेडरिक सिमलीह

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I)

परामर्शदाता

श्री. पृथ्वीपाल सिंह कानावत

वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन)

संपादक

सुश्री षिबी. टी. मांजूरान

सहायक निदेशक (राजभाषा)

संयोजन व अभिकल्पना

लक्ष्मी नारायण प्रसाद

वरि लेखापरीक्षक

अनुक्रमणिका

क्रम सं.	विषय	के द्वारा (सुश्री/श्री/श्रीमती)
1.	मुझे सबसे अधिक पसंद आई फ़िल्म – चिल्ड्रेन ऑफ़ हेवन (1997)	एम .भुवनेश्वरी /व ले प अ
2.	ईश्वर का अपना देश: तेन्मला और आर्यनकावु की छोटी सी यात्रा	एस असोकन /परामर्शदाता
3.	धर्म: ओडिसी, रामायण और महाभारत हमें क्या सिखाते हैं	एस असोकन /परामर्शदाता
4.	प्रेम की दृष्टि	मोहनप्रिया /लेखापरीक्षक
5.	वन्दे मातरम् क्या है	मुकुन्द माधव भारती/डी.ई.ओ
7.	पर्यावरण और भविष्य	मुकुन्द माधव भारती/डी.ई.ओ
8.	जुगनू	दीपा के वी/ स ले प अ
9.	संघर्ष से उभरने की नेटवर्किंग	दीपा के वी/ स ले प अ
10.	खोखले रिश्तों की बेबुनियाद दिवार	मुकुन्द माधव भारती/डी.ई.ओ
11	जंगल की गुफा का रहस्य	मोना बंसल/ स ले प अ
12	अपनी सुरक्षा , अपने हाथ; जय हिन्दी	-जे पुष्कला /व० ले प अ
13	भावनात्मक सुकून	वें कटेश एम /लेखापरीक्षक
14	सहानुभूति के साथ पढ़ाना	एलंगोवन एन/ स ले प अ
15	खुशी और दयालुता	एल. अभिरामी/व० ले प अ
16	काम भी, जीवन भी: संतुलन ही असली सफलता	एम रश्मि /सहायक प्रयवेक्षक
17	तिनका	यशवंत कु मार /स ले प अ
18	मुखपृष्ठ तेरुक्कूतु के बारे में.....	
19	अवसाद	के एस नव्या / स ले प अ
20	कल्याण गतिविधियाँ	

प्रत्याख्यान: इस गृहपत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में जितने विचार हैं वह केवल रचनाकारों के अपने मात्र हैं ।

इसलिए इन्हें सृजनात्मकता की दृष्टि से पढ़ने की कृपा करें । रचनाओं की मौलिकता का दायित्व भी

रचनाकारों तक सिमित रहेगा ।

मुझे सबसे अधिक पसंद आई फ़िल्म – चिल्ड्रेन ऑफ़ हेवन (1997)

एम .भुवनेश्वरी /व ले प अधिकारी



“चिल्ड्रेन ऑफ़ हेवन” एक अत्यंत भावनात्मक ईरानी फ़िल्म है, जो प्रेम, त्याग और बचपन की मासूमियत को बड़ी खूबसूरती से प्रस्तुत करती है।

यह कहानी तेहरान के एक गरीब परिवार के छोटे लड़के अली की है, जो गलती से अपनी छोटी बहन ज़हरा के एकमात्र जूते खो देता है। माता-पिता की डाँट और परिवार की आर्थिक तंगी को देखते हुए दोनों भाई-बहन इस बात को गुप्त रखने का निर्णय लेते हैं। वे अली के जूतों को बारी-बारी से पहनकर स्कूल जाने की योजना बनाते हैं। ज़हरा सुबह उन्हीं जूतों को पहनकर स्कूल जाती है और लौटते ही अली उन्हें पहनकर अपनी दोपहर की कक्षाओं में पहुँचता है। इस व्यवस्था से कई तनावपूर्ण, लेकिन बेहद भावुक क्षण जन्म लेते हैं।

एक दिन अली देखता है कि ज़हरा के खोए हुए जूते एक दूसरी लड़की पहन रही है। लेकिन जब उसे पता चलता है कि वह परिवार उससे भी अधिक गरीब है, तो वह उनसे जूते वापस लेने के बजाय दया और संवेदना का परिचय देता है। बाद में उसे पता चलता है कि स्कूल की मैराथन दौड़ में तीसरे स्थान का पुरस्कार एक जोड़ी जूते हैं। ज़हरा के लिए वे जूते जीतने की आशा में अली पूरी लगन से अभ्यास करता है। लेकिन विडंबना यह होती है कि वह तीसरे स्थान के बजाय पहला स्थान प्राप्त कर लेता है। जहाँ सभी उसकी जीत पर खुश होते हैं, वहीं अली मन ही मन दुखी होता है क्योंकि वह अपनी बहन के लिए जूते नहीं जीत पाया।



फ़िल्म का अंत अत्यंत मार्मिक है। अली निराश होकर घर लौटता है, जबकि उसे यह पता नहीं होता कि उसके पिता दोनों बच्चों के लिए नए जूते खरीद चुके हैं। यह अंत भाई-बहन के निस्वार्थ प्रेम, त्याग और अटूट स्नेह को अत्यंत संवेदनशील ढंग से प्रस्तुत करता है।

चिल्ड्रेन ऑफ़ हेवन एक कालजयी उत्कृष्ट कृति है, जिसे हर सिनेमा प्रेमी को अवश्य देखना चाहिए। यह फ़िल्म हमें सिखाती है कि जीवन की सबसे बड़ी दौलत भौतिक वस्तुएँ नहीं, बल्कि प्रेम, त्याग, दया और करुणा जैसे मानवीय गुण हैं, जो हमारे जीवन को वास्तव में समृद्ध बनाते हैं।



ईश्वर का अपना देश: तेन्मला और आर्यनकावु की छोटी सी यात्रा



एस असोकन /परामर्शदाता

मेरे पास सिर्फ दो दिन थे, पर केरल ने मुझे जिंदगी भर की यादें दे दीं। लोग इसे _God's Own Country_ कहते हैं और इस बार जाकर समझ आया, क्यों। ना ट्रैफिक का शोर, ना बड़ी-बड़ी इमारतें। बस हर तरफ हरियाली और ऐसी शांति जिसमें साँस लेने का मन करे।

तेनमला : कैची मोड या इनवर्टेड S बेंड*

पहला पड़ाव था तेनमला। जैसे ही मुख्य रोड छोड़ी, सब कुछ बदल गया। पहाड़ों के बीच सड़क एक उल्टे 'S' की तरह घूम रही थी। दोनों तरफ इतने घने जंगल कि पेड़ों का अंत दिख ही नहीं रहा था। ना दुकानें, ना होर्डिंग, ना सीमेंट। सिर्फ कुदरत। मौसम बहुत सुहावना था। ना ज्यादा गर्मी, ना ठंड। बस ठंडी हवा और गीले पत्तों की खुशबू। पहाड़ों के बीच से कभी-कभी कोहरा आ जाता। हमने गाड़ी तीन बार रोकी, सिर्फ खड़े होकर नज़ारा देखने के लिए।



तेनमला भारत का पहला इको-टूरिज्म प्रोजेक्ट है और यहाँ वह साफ दिखता है। सब कुछ कुदरती रखा गया है। पक्षियों की आवाज, साफ हवा, और शहरीकरण का नामोनिशान नहीं। कुछ देर के लिए लगा जैसे समय रुक गया हो, या समय पीछे चल गया हो

वह “ S “बेंड सिर्फ एक सड़क नहीं था। वह एक पोस्टकार्ड था। हर मोड़ पर घाटी और पेड़ों का नया

नज़ारा। अगर एक घंटे की शांति चाहिए तो यह जगह सर्वोत्तम है।

आर्यनकावु: जंगल के बीच मशहूर पुल*

तेनमला से हम आर्यनकावु की तरफ गए, जो तमिलनाडु सीमा के पास है। और फिर दिखा वह मशहूर आर्यनकावु रेलवे पुल। ये शहर वाला बड़ा पुल नहीं है। ये एक सीधा-साधा पुल है जो घने जंगल और पहाड़ों के बीच से गुजरता है। ऊपर ट्रेन की



पटरी और नीचे सिर्फ हरियाली और छोटी नदियाँ। आसपास कोई इमारत नहीं, कोई भीड़ नहीं। हम दस मिनट रुके और ट्रेन धीरे-धीरे गुजरी। उसकी आवाज पहाड़ों में गूँजी और फिर सब शांत।

सबसे अच्छी बात यह लगी कि यहाँ सब कुछ अभी भी वैसा ही है। केरल ने इस इलाके को शहरीकरण से बचा कर रखा है। नारियल के पेड़, रबर के बागान और जंगल सब साथ-साथ। यहाँ का मौसम साल भर सुहावना रहता है। दोपहर में भी चिपचिपाहट नहीं थी।

पुल के पास सड़क पर खड़े होकर लगा कि लोग छोटी -यात्रा के लिए केरल क्यों आते हैं। 10 दिन की जरूरत नहीं। 48 घंटे भी आपको रिचार्ज कर देते हैं।

ये यात्रा खास क्यों थी*

1. *हर तरफ हरियाली*: तेनमला से आर्यनकावु तक सिर्फ पेड़, पहाड़ और नदियाँ। ना प्रदूषण, ना भागदौड़।



2. *सुहावना मौसम*: ठंडी हवा, हल्की धूप और बीच-बीच में कोहरा। छोटी ड्राइव के लिए एकदम सही।

3. *शहरीकरण नहीं*: आज भारत में ऐसी जगह मिलना मुश्किल है जहाँ ना मॉल हो ना शोर। ये इलाका आज भी 30 साल पुराना लगता है।

4. *छोटी अवधि के लिए बेस्ट*: हमने दोनों जगह 1 दिन में पार कर लीं। कोई भागदौड़ नहीं। बस चलो, रुको, देखो और फिर चलो।

केरल शोर मचाकर ध्यान नहीं मांगता। वह बस अपने जंगल, अपने पुल और अपनी शांत सड़कें दिखाता है और आप खुद महसूस कर लेते हैं। तेनमला के S बेंड ने धीरे चलना सिखाया। आर्यनकावु के पुल ने बताया कि छोटी चीजें कितनी खूबसूरत होती हैं।

“सिर्फ दो दिन। और _ईश्वर का अपना देश_ मेरी सबसे पसंदीदा याद बन गया।”



धर्म: ओडिसी, रामायण और महाभारत हमें क्या सिखाते हैं



एस असोकन /परामर्शदाता

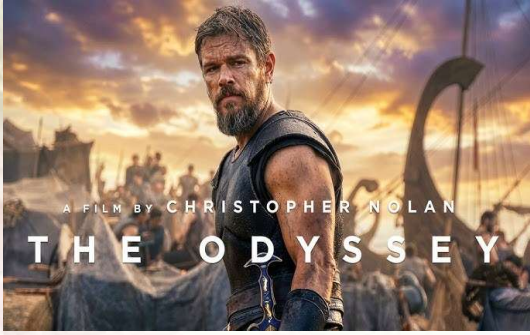
क्रिस्टोफर नोलन की नई फिल्म _द ओडिसी_ ने ग्रीस की पुरानी कहानी को फिर से पूरी दुनिया के सामने रख दिया है। लोग फिर से ओडिसियस का 10 साल का सफर देख रहे हैं। राक्षस, देवता, समुद्र और घर लौटने की तड़प।

लेकिन ये पहली बार नहीं है कि दुनिया ने ऐसी कहानी सुनी हो। होमर से भी पहले, और उसके बाद हजारों सालों से, भारत दो महाकाव्य सुना रहा है। _रामायण_ और _महाभारत_।

तीनों कहानियाँ युद्ध, वनवास और घर लौटने के बारे में हैं। पर इनसे भी ज़रूरी बात ये है कि तीनों एक ही सवाल पूछती हैं। धर्म। सही क्या है।

1. ओडिसी: धर्म का मतलब है दिमाग से अपने घर की रक्षा करना*

नोलन की फिल्म में ओडिसियस एक ऐसा इंसान है जो तलवार से ज़्यादा दिमाग चलाता है। वह साइक्लोप्स को धोखा देता है। सायरन का गाना सुनने के लिए खुद को जहाज से बंधवा लेता है। कई बार झूठ भी बोलता है।



यूनानियों के लिए ये गलत नहीं था। उनके लिए धर्म का मतलब था व्यवस्था। मेहमान का सम्मान करो। देवताओं का सम्मान करो। पत्नी और अपनी जमीन के प्रति वफादार रहो। ओडिसियस किसी भी तरह पेनेलोप और इथाका तक पहुँचना चाहता है। चालाकी एक गुण है। जीना ही धर्म है। सीधी बात है- जब दुनिया गलत हो, तो अपने दिमाग से उसे ठीक करो।

2. रामायण: धर्म का मतलब है बिना सवाल किए अपना कर्तव्य निभाना*



वाल्मीकि की रामायण बिल्कुल अलग कहानी कहती है। राम को 14 साल के लिए जंगल जाना पड़ा। वह चले गए। उन्होंने सवाल नहीं किया। उन्होंने युद्ध करके सीता को वापस लाया। और फिर लोगों के लिए उन्हें छोड़ भी दिया।

यहाँ धर्म में कोई लचीलापन नहीं है। बेटे को पिता की आज्ञा माननी है। राजा को पहले प्रजा के बारे में सोचना है। पति-पत्नी को अपना वचन निभाना है।

इसीलिए राम को मर्यादा पुरुषोत्तम कहा गया। क्योंकि उन्होंने हर सीमा का पालन किया। चाहे उन्हें कितना भी दुख क्यों न हुआ हो। रामायण हमें सिखाती है कि धर्म का मतलब है त्याग। अपनी खुशी से पहले कर्तव्य को रखना।

3. महाभारत: धर्म का मतलब है सवाल पूछना और फिर भी काम करना*

व्यास की महाभारत तीनों में सबसे इंसानी कहानी है। अर्जुन युद्ध के मैदान में खड़ा होकर धनुष रख देता है। सामने उसके गुरु, उसके भाई, अपने ही लोग हैं। वे कैसे लड़े? कृष्ण उसे एक नियम नहीं देते। वह कहते हैं, तुम योद्धा हो। अपना काम करो। नतीजे की चिंता मत करो।

इस कहानी में धर्म काला-सफेद नहीं है। युधिष्ठिर युद्ध में झूठ बोलते हैं। भीष्म सभा में चुप रहते हैं। द्रौपदी सवाल करती हैं। महाभारत हमें दिखाती है कि असली जिंदगी आसान नहीं होती। धर्म समय, जगह और स्थिति के साथ बदलता है। तुम्हें सोचना है, और फिर अपने फैसले की जिम्मेदारी लेनी है।



तीन महाकाव्य, तीन जवाब*इसलिए हमारे पास तीन बड़ी कहानियाँ हैं, और तीन अलग जवाब।

ओडिसी कहती है: होशियार बनो। अपनी चीजों की रक्षा करो।

रामायण कहती है: अपना कर्तव्य निभाओ। मिसाल बनो।

महाभारत कहती है: गहराई से सोचो। क्योंकि सही रास्ता कभी साफ नहीं होता।

ओडिसियस घर जाना चाहता है। राम अपना वचन निभाना चाहते हैं। अर्जुन ये जानना चाहते हैं कि सही क्या है।

शायद इसीलिए ये कहानियाँ आज भी हमारे साथ हैं।
कभी हमें ओडिसियस जैसा दिमाग चाहिए।
कभी राम जैसा वचन निभाने की ताकत।
और ज्यादातर वक्त अर्जुन जैसा हिम्मत, अपने शक का सामना करने की।

धर्म का सवाल पुराना है। पर जैसा नोलन की फिल्म दिखाती है, आज भी यही सवाल हम पूछ रहे हैं।



प्रेम की दृष्टि



मोहनप्रिया /लेखापरीक्षक

एक पत्थर,
मूर्तिकार की नज़र में मूर्ति बन जाता है।
एक खाली स्थान,
कलाकार की नज़र में उत्कृष्ट कृति बन जाता है।
बंजर भूमि,
किसान के हाथों में उपजाऊ हो जाती है।
एक खाली घर,
माँ के स्नेह की गर्माहट से स्वर्ग बन जाता है।



इसी तरह,
आपकी मौजूदगी केवल वहीं सराही जाती है,
जहाँ प्रेम बसता है।
वास्तव में,
सुंदरता और मूल्य
हमेशा देखने वाले के हृदय में ही होते हैं।



वन्दे मातरम् क्या है



मुकुन्द माधव भारती/डी.ई.ओ

जहाँ, जोश और जुनून है ।
वन्दे मातरम् - वन्दे मातरम्
जहाँ, शक्ति और साहस का पर्याय है ।
वन्दे मातरम् - वन्दे मातरम्
जहाँ, दयित्व और विश्वास की मर्यादा है ।
वन्दे मातरम् - वन्दे मातरम्
जहाँ, त्याग और बलिदान की परिभाषा है ।
वन्दे मातरम् - वन्दे मातरम्
जहाँ, पराक्रम और शौर्य की गाथा है ।
वन्दे मातरम् - वन्दे मातरम्
जहाँ, माता और मातृभूमि का स्वर्ग से भी बढ़कर सम्मान है ।
वन्दे मातरम् - वन्दे मातरम्
जहाँ, हरियाली का मालिक कृषक प्रधान है ।
वन्दे मातरम् - वन्दे मातरम्
जहाँ, केसरिया बल भरता हुआ, स्वाभिमान है ।
वन्दे मातरम् - वन्दे मातरम्
जहाँ, श्वेत रंग शांति का गौरव गान है ।
वन्दे मातरम् - वन्दे मातरम्
जहाँ, चक्र प्रगति पथ का आह्वान है ।
वन्दे मातरम् - वन्दे मातरम्
जहाँ, जन-गणतंत्र विधाता के स्वर की गूँज है ।
वन्दे मातरम् - वन्दे मातरम्
जहाँ, विविध भौगोलिकता का प्रमाण है ।
वन्दे मातरम् - वन्दे मातरम्

जहाँ, वेशभूषा और भाषा की भिन्नता है ।
वन्दे मातरम् - वन्दे मातरम्
जहाँ, इतनी विविधताओं में भी एकता है ।
वन्दे मातरम् - वन्दे मातरम्
जहाँ, धर्म निरपेक्षता और संविधान ही जन मानस का प्राण है ।
वन्दे मातरम् - वन्दे मातरम्
जहाँ, नदियों को माता और पत्थरो में ईश्वर होने का विश्वास है ।
वन्दे मातरम् - वन्दे मातरम्
जहाँ, हिमालय भारत माता के मस्तक का भाल है ।
वन्दे मातरम् - वन्दे मातरम्
जहाँ, सागर चरणों को धोकर मानता, अपने को निहाल है ।
वन्दे मातरम् - वन्दे मातरम्
जहाँ, यह भारत के गौरव का इतिहास है ।
वन्दे मातरम् - वन्दे मातरम्
जहाँ, चंद्र दिवाकर और तारेगण, भारत माता के वैभव - प्रताप का साक्ष्य है ।
वन्दे मातरम् - वन्दे मातरम्
जय जन भारत जन मन अभिमत से गाते हैं जन गणतंत्र विधाता ।
वन्दे मातरम् - वन्दे मातरम्

जहाँ, विविध सभ्यता - संस्कृति का दर्शन है ।

वन्दे मातरम् - वन्दे मातरम्



पर्यावरण और भविष्य

मुकुंद माधव भारती/डी.ई.ओ



पर्यावरण अमृत है, जीवन का आधार है ।
पर्यावरण, ही जीवन का कल और आज है ।
पर्यावरण, जीवन का धरोहर है, और जीने का पर्याय है ।
पर्यावरण, जीवों के जीवन का स्रोत और भंडार है ।
पर्यावरण, सुरक्षित है तो जीव समुदाय का बेहतर कल और आज है ।

समस्त जीव समुदाय का पर्यावरण ही घर है ।
क्या है ? पर्यावरण, जो देते इनपर इतना बल है ।
पर्यावरण ही प्राणवायु है, जीवन जीने का आधार है ।
असंतुलित हुआ जो पर्यावरण, तो विपदा आएगी भरमार है ।
बाढ़-भूकंप-भूस्खलन का रूप लेकर, त्रासदियों आएँगी भरमार ।

हम आज विदोहन कर रहे हैं, पर्यावरण के मूल्यों का ।
जल को दूषित कर डाला, हरियाली को धो डाला ।
वायु को भी हमने कहाँ छोड़ा है, अमृत से विष कर डाला है ।
मानवीय व्यवहार ने प्रकृति को, प्रलयकारी रुद्र - रूप में कर डाला है ।
राहु और शनि जैसा जब पर्यावरण प्रलयकारी होगा, तो कौन ? उसका उत्तरदायी होगा ।

प्रश्नों का हल नहीं, अब समाधान बताना है ।
भविष्य के लिए पर्यावरण को बेहतर बनाना है ।
प्रदूषित वायु- जल- भूमि के संरक्षण हेतु पेड़ों को लगाना है ।
ले वचन प्रदूषण से बचने को, नित्य नवीन विकल्प साधना है ।
नदियों और सागर को पावन समझे, व्यर्थ न अपशिष्ट पदार्थ डालना है ।

वायु में न विष घोले और न ही अपशिष्ट जलाये ।
वैकल्पिक स्रोतों को ढूँढे, स्वच्छ स्वभाव बनाये ।
दायित्वों का स्वयं निर्वहन कर, दुसरों से करवाए ।
हम अपने भविष्य का भविष्य बचाये, बेहतर पर्यावरण बनाए ।
पछतावा होगा भविष्य का नूतन भविष्य न बचा पाओगे ।
असंतुलित हुआ जो पर्यावरण अगर, तो मूल्य देकर भी मूल्य न चूका पावहगे ।



जुगनू



दीपा के वी / स ले प अधिकारी

उस पहाड़ी की तलहटी में बने छोटे से घर में उस रात घना अंधेरा था। तेज हवा और बारिश के कारण बिजली गुल हो गई थी। रोशनी से महरूम उस रात में, पति के बड़े भाई का तीन साल का 'कोच्चु' ही उसका इकलौता सहारा था।

"चाची... मुझे भूख लगी है... कुछ खाने को दे ना..." अंधेरे में उसका नटखट आवाज गूंजी।

रसोई के बर्तनों में बच्चों की पसंद का कोई स्नैक नहीं था। आखिरकार, अंदर लेटी अपनी सास की इजाजत लेकर उसने थोड़ा पोहा (अविल) निकाला और उसे दे दिया। मोमबत्ती की हल्की रोशनी में, पोहा चबाते हुए वे दोनों बरामदे में बिछी चटाई पर बैठ गए। लेकिन उनकी वह खुशी और प्यार भरी बातें अंदर बैठी सास को बिल्कुल रास नहीं आ रही थीं; उनकी झुंझलाहट और बड़बड़ाहट की आवाजें बाहर तक आ रही थीं। फिर भी, उन मुश्किल दिनों में, उसकी मन का एकमात्र सुकून वही छोटा सा बच्चा था।

तभी बच्चे को शौचालय जाने की जिद पकड़ी। घर से थोड़ी दूरी पर बने पुराने शौचालय तक, अपनी शारीरिक तकलीफों को दरकिनार करते हुए, वह भारी बारिश में भी उसे ले गई। अंदर से सास-ससुर की बड़बड़ाहट साफ सुनाई दे रही थी, फिर भी उसने बच्चे को अपने सीने से लगा रखा था और बरामदे में बैठी रही।

कुछ देर बाद, बारिश को चीरती हुई एक रोशनी पास आई। 'कोच्चु' को लेने उसके पिता आए थे। जैसे ही वह सीढ़ियां उतरकर गया, उस बरामदे में वह एक बार फिर अकेली रह गई।

बारिश और तेज हो रही थी, बिजली वापस आने की कोई गुंजाइश नहीं थी। बरामदे में बैठकर थोड़ी देर पहले हुई बातों को याद कर वह आहें भर ही रही थी कि... उस घने काले अंधेरे में जुगनूओं का एक झुंड उड़ता हुआ आ पहुंचा!

उस खूबसूरत हरी रोशनी ने न सिर्फ उसकी आंखों को, बल्कि उसकी मन के अंधेरे को भी एक पल के लिए रोशनी से सराबोर कर दिया। आज से पहले कभी न देखे गए उस अद्भुत नजारे को देखते ही, उसकी पेट में पल रही सात महीने की नन्हीं जान ने पहली बार लगातार लातें मारना शुरू कर दिया! मानो वह बच्चा पेट के अंदर दौड़-भाग कर खेल रहा हो, उसकी पेट ऊपर-नीचे होने लगा।

आज वह (उसकी बेटा) इक्कीस साल का हो चुका है।

उस पहाड़ी की तलहटी से कई शहर और दूर पार कर, आज इस विशाल मेट्रो शहर के फ्लैट के कमरे में बैठे हुए भी, वह रात उसकी ज़हन में तरोताजा है। उस रात जितने जुगनू वह देखे थे, उतने फिर किसी रात नहीं देखे; न ही उस हरी रोशनी की गर्माहट उसकी दिल से कभी मिट पाई।

तब का वह तीन साल का 'कोच्चु' अब लगभग पच्चीस साल का हो गया होगा। पुराने रिश्ते और पाबंदियां पीछे छूट गईं और वक्त बहुत आगे निकल आया, फिर भी सोशल मीडिया की तमाम तलाशों में उसकी मन आज भी कोच्चु को ही ढूंढता है... यादों के अंधेरे में टिमटिमाते उस छोटे से जुगनू की तरह।



संघर्ष से उभरने की नेटवर्किंग



दीपा के वी/ स ले प अधिकारी

वह एक रविवार की शाम थी।

दिया अथाह आँसुओं और अपमान का बोझ उठाए, छात्रावास की वार्डन की लगातार डाँट-फटकार सुनते हुए सैकड़ों छात्राओं के बीच खड़ी थी। बीच-बीच में आँसू पोंछकर जब उसने सिर उठाकर देखा, तो चारों मंजिलों की सीढ़ियों पर खड़ी अनेक निगाहें उसे आश्चर्य और उपहास से देख रही थीं। कई लड़कियों के हाथों में पकड़ी चाय और नाश्ता ठंडा हो चुका था। सभी के चेहरों पर बस एक ही सवाल था-आखिर हुआ क्या है? अगले दिन विश्वविद्यालय की परीक्षा थी, इसलिए कुछ देर बाद अधिकांश छात्राएँ अपने-अपने कमरों में लौट गईं।

वार्डन के कठोर शब्दों ने उसे भीतर तक घायल कर दिया था। चारों ओर घूरती निगाहें थीं। अब वह इस छात्रावास में कैसे रह सकती थी? उसे सांत्वना देने के लिए एक भी व्यक्ति आगे नहीं आया। दिया ने तय कर लिया कि वह अपनी पढ़ाई अधूरी छोड़कर घर लौट जाएगी। घटी घटना की जानकारी वार्डन के फोन से उसकी माँ को मिल चुकी थी। माँ ने उसे फोन किया।

"माँ, कोई मुझे समझ नहीं रहा है। मैं पढ़ाई छोड़कर घर वापस आ रही हूँ..." वह रोते हुए बोली।

माँ की आवाज़ टूट थी- "अगर तुम वापस आई, तो मुझे और अपने बच्चे को जीवित नहीं देखोगी। तुम मुझे जानती हो। जो कहती हूँ, वह करके दिखाती हूँ।"

इतना कहकर माँ ने फोन रख दिया।

माँ के अटल स्वभाव से दिया परिचित थी। वह डर गई। पुलिस, मुकदमे, अदालत, रिश्तेदारों और समाज के सवाल, ऊपर से आर्थिक बोझ—सब कुछ उसकी आँखों के सामने घूमने लगा। जीवन को दोबारा सँवारने के लिए उसने शिक्षा ऋण लिया था और मात्र छह महीने के अपने शिशु को छोड़कर बी.टेक की पढ़ाई करने आई थी। यदि वह लक्ष्य छोड़कर लौट जाती, तो माँ सचमुच अपनी बात पूरी कर देती।

उसके मन में बार-बार एक ही प्रश्न उठ रहा था- "क्या मुझसे कोई गलती हुई थी? जो कुछ हुआ, क्या उसके लिए मैं ही जिम्मेदार थी?"

उसी सुबह उसके परिवार वालों और उसके साथ उच्च न्यायालय गए प्यत्र के उप-निरीक्षक (एस.आई.) ने उसे फोन पर सावधान किया था कि उसका जीवन बर्बाद कर चुके पति और उसके साथी छात्रावास आकर उसे जबरन ले जाने की कोशिश कर सकते हैं। उसके पिता ने यह आशंका वार्डन और कॉलेज प्रशासन को पहले ही बता दी थी। यह बात उसने केवल अपने कुछ करीबी मित्रों को ही बताई थी।

अगले दिन की परीक्षा की तैयारी में सभी छात्राएँ व्यस्त थीं। कोई नीचे बरामदे में पढ़ रही थी, तो कोई गलियारे में। लेकिन दिया इस चिंता में डूबी थी कि पता नहीं अगले ही पल क्या होने वाला है।

शाम की चाय की घंटी बजी। वह चाय लेकर सीढ़ियाँ चढ़ रही थी कि उसने अपनी सहेलियों को एक साथ बैठकर पढ़ते देखा। वह भी उनके पास जाकर बैठ गई। उसे लगा कि अब देर हो चुकी है, इसलिए शायद कोई नहीं आएगा।

लेकिन कुछ ही देर बाद अचानक तीन वाहन छात्रावास के सामने आकर रुके।

"लगता है, वही लोग हैं!" उसकी एक सहेली ने कहा।

यह सुनते ही **दिया** जान बचाकर ऊपर की मंजिल की ओर भाग गई।

शायद कार में बैठे उसके पति ने उसे देख लिया था। वह और उसके साथी जबरन छात्रावास में घुस आए। प्रशासन ने उन्हें रोकने की कोशिश की और देखते ही देखते वहाँ भारी हंगामा मच गया। भयभीत होकर **दिया** अपने कमरे में छिप गई। जब शोर कुछ कम हुआ, तो उसने ऊपर की खिड़की से बाहर झाँका। सुरक्षा कर्मी उन्हें परिसर से बाहर निकाल रहे थे।

थोड़ी देर बाद जब **दिया** नीचे उतरी, तो वार्डन ने उसे रोक लिया।

"तुम्हें पहले से पता था कि ऐसा हो सकता है, फिर भी तुम कमरे से बाहर निकली। यह सब जानबूझकर किया गया है। छात्रावास के इतिहास में ऐसा पहली बार हुआ है। अब तुम्हें यहाँ रहने की अनुमति नहीं दी जाएगी।"

सैकड़ों छात्राओं के सामने उसका सार्वजनिक रूप से अपमान किया गया।

उस क्षण **दिया** को लगा कि उसका भविष्य समाप्त हो चुका है।



उसे विश्वास हो गया कि अगले दिन की परीक्षा में वह असफल हो जाएगी। और वह परीक्षा उसी विषय की थी, जिसे वह सबसे अधिक पसंद करती थी—'नेटवर्किंग'। दूसरी छात्राएँ समय की कमी के कारण फिर से पढ़ाई में लग गईं। वह टूट चुकी थी। चुपचाप आँसू पोंछकर लेट गई। किसी ने यह तक नहीं पूछा कि उसने खाना खाया या नहीं, या वह पढ़ क्यों नहीं रही। उसके मन में यह चिंता भी थी कि यदि वह असफल हुई, तो पुनः परीक्षा देने के लिए 450 रुपये देने होंगे।

धीरे-धीरे कमरे में सब सो गए। **दिया** उठी।

उसे अपना लक्ष्य याद आया। डाइनिंग हॉल के एक सुनसान कोने में, हवा से उड़ते पर्दों और अँधेरे में होती हर हलचल से डरते हुए भी, वह सुबह होने तक लगातार पढ़ती रही।

सुबह हमेशा की तरह साढ़े छह बजे काली कॉफी लेकर वह अपने कमरे में लौटी। थोड़ी देर विश्राम किया, स्नान किया, प्रार्थना की और परीक्षा कक्ष की ओर चल पड़ी।

तीन महीने बाद परिणाम घोषित हुआ।

सभी विषयों में उत्तीर्ण होने वाले गिने-चुने विद्यार्थियों में **दिया** का नाम भी था। उसके कमरे की कई सहेलियाँ और अन्य अनेक छात्राएँ असफल हो गई थीं, विशेषकर 'नेटवर्किंग' विषय में।

आज भी **दिया** मानती है कि सत्य और ईश्वर उसके साथ थे। उसी विश्वास और साहस के बल पर वह एक भी विषय में असफल हुए बिना बी.टेक की डिग्री प्राप्त कर सकी।

उस दिन **दिया** ने केवल एक परीक्षा नहीं जीती थी। उसने अपना जीवन जीत लिया था।



खोखले रिश्तों की बेबुनियाद दिवार

मुकुंद माधव भारती/डी.ई.ओ



कहानी के पात्रों का परिचय

शांति – पुत्री

गौतम – पुत्र

अमित – दामाद

उपासना – पुत्रवधू

रूपा- शांति की चाची

शांति काम निपटा के बैठी थी, कि अचानक फोन की घंटी बजने लगी कटिहार से रूपा चाची का फोन था । बिटिया आकर अपने बाबूजी को ले जाओ यहां से बीमार रहने लगे हैं, और बहुत ही कमजोर हो गए हैं, स्वास्थ्य भी हमेशा ठीक नहीं रहता है । स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव होते रहते है अब उनका देखभाल करना बहुत मुश्किल हो गया है । वैसे भी आखरी समय में अपने बच्चों के साथ बिताना चाहिए । शांति बोली ठीक है चाची जी, इसी सप्ताह आते है, और बाबूजी को हम दिल्ली लेकर आएंगे । फिर इधर-उधर की बात होने लगी और उसके बाद रूपा चाची ने फोन काट दिया । बाबूजी के चार भाई और बहनें हैं और पुरखों की पुश्तैनी जमीन और मकान का बंटवारा नहीं हुआ था, तीनों वहीं रहते थे शांति (पुत्री) और उसका छोटा भाई गौतम (पुत्र) दिल्ली में रहते हैं । अपने-अपने परिवार के साथ तीन-चार साल पहले गौतम को फ्लैट खरीदने के लिए पैसे की आवश्यकता पड़ी तो बाबूजी ने भाइयों से मकान के अपने एक चोथाई हिस्से को लेकर गौतम को एक चोथाई हिस्से का पैसा दे दिया था, खाने- पहनने के लिए अपने पास कुछ पैसे बाबूजी ने रखे थे । वह दिल्ली अपने बच्चों के पास नहीं जाना चाहता था । इसलिए एक छोटा सा कमरा जो परिवार के हिस्से में उनको मिला था, उसी में पिताजी रहते थे । वह सोचते थे की उम्र के इस अंतिम पड़ाव में किसी को क्या कष्ट दें । बाकी का जीवन यूं ही कट जाएगा इसलिए वह इस छोटे से कमरे में अकेले रहा करते थे ।

शांति को लगता था कि अम्मा के गुजरने के बाद पिताजी बिल्कुल अकेले पड़ गए होंगे । लेकिन वहां पुराने परिचितों एवं संबंधियों के बीच उनका मन लग रहा था । दोनों चाचियाँ, बाबूजी का ध्यान रखती थी, दिल्ली में दोनों भाई-बहन की गृहस्थी भी मजे में चल रही थी । इसी सप्ताह को शांति का ही केवल कटिहार जाने का कार्यक्रम बन पाया, शांति के पति अमित (दामाद) एक व्यस्त डॉक्टर है, महीने की लाखों की कमाई है, उनका इस तरह से छुट्टी लेकर निकालना बहुत मुश्किल है । मरीजों की बीमारी ना रविवार देखती है ना सोमवार देखती है, डॉक्टर के पेशे में 24 घंटे काम ही काम होते हैं । उनकी

प्राथमिकता केवल मरीजों के प्रति समर्पित होना ही रहता है । गौतम की पत्नी उपासना (पुत्रवधू) की अपनी जिंदगी है, उच्च वर्गीय परिवार में पली-बड़ी होने के कारण उनका ऐसे परिवारों में उठना बैठना है । उसका इस तरह के छोटे-मोटे पारिवारिक पचड़ों में पड़ना उसे पसंद नहीं है । रास्ते भर शांति को लगा कि गौतम कुछ अनमना गुमसुम सा बैठा है वह बोली इतना परेशान मत हो ऐसी कोई चिंता की बात नहीं है उम्र हो रही है थोड़े कमजोर हो गए हैं ठीक हो जाएंगे, गौतम अपनी बहन की तरफ देखते हुए बोला, अच्छा खासा चल रहा था पता नहीं चाची जी को ऐसी क्या मुसीबत आ गई, दो-चार साल और रख लेते, अब तो मकान के दाम आसमान छू रहे हैं, तब कितने कम पैसों में बाबूजी ने अपने परिवार - पाटीदार को अपने पुरखों की पुश्तैनी जमीन कम कीमत पर दे दिया ।

शांति गौतम को शांत करने की मंशा से बोली ठीक है ना, उस समय जितने भाव थे बाजार में उस हिसाब से दे दिए और बाबूजी आखिरी समय अपने बच्चों के साथ बिताएंगे तो उन्हें अच्छा लगेगा । गौतम उत्तेजित हो गया बोला दीदी तेरे लिए यह सब कहना बहुत आसान है । तीन कमरे के फ्लैट में कहां रखेगा उन्हें उपासना (पुत्रवधू) से किट किट रहेगी सो अलग, उसने तो साफ मना कर दिया है । वह बाबूजी का कोई काम नहीं करेगी । वैसे तो दीदी आजकल लड़कियां हक मांगने में बड़ी जल्दी खड़ी हो जाती हैं, कुछ करने के हो तो क्यों पीछे हट जाती हैं ? आजकल लड़कियों की शिक्षा और शादी के समय में अच्छा खासा खर्च हो जाती है । तू क्यों नहीं ले जाती बाबूजी को, गौतम ने अपने दीदी के और देखते हुए कहा । अपने घर में इतनी बड़ी कोठी है बाबूजी को कहीं एक कोना जगह दे देना वहीं पड़े रहेंगे । जीजा जी की लाखों की कमाई है, शांति को गौतम का इस तरह बोलना ठीक नहीं लगा । गौतम, पैसे लेते समय कैसे वादा कर रहा था, बाबूजी से आपको किसी भी वस्तु की आवश्यकता हो आप निःसंकोच फोन कर देना, मैं तुरंत लेकर आऊंगा बस इस समय हाथ थोड़ा तंग है । नाम मात्र पैसे छोड़े थे बाबूजी के पास, और फिर कभी नहीं उनकी सुधि लेने की इच्छा, की पिताजी किस हालत में है, थोड़ी उनकी सुधि ले, शांति तू चिंता ना कर, मैं ले आऊंगी बाबूजी को अपने घर, सही है मुझे क्या परेशानी इतना बड़ा घर फिर पति रात दिन मरीजों की सेवा करते हैं, एक पिता तुल्य ससुर को आश्रय तो दे ही सकते हैं ।

बाबूजी को देखकर उसकी आंखें भर आई इतने दुबले और बेबस दिख रहे थे, गले लगाते हुए बोली पहले फोन करवा देते पहले लेने आ जाती । बाबूजी बोले तुम्हारी अपनी जिंदगी है । क्या परेशान करना वैसे भी दिल्ली में बिल्कुल तुम लोगों पर आश्रित हो जाऊंगा ।

रात को डॉक्टर साहब बहुत देर से आए तब तक पिता और बच्चे सो चुके थे, खाना खाने के बाद सुकून से बैठते हुए शांति ने डॉक्टर साहब से कहा बाबूजी को मैं यहां ले आई हूं गौतम का घर बहुत छोटा है उसे इन्हें रखने में थोड़ी परेशानी होती ।

अमित (दामाद) के एकदम तेवर बदल गए, वह सख्त लहजे में बोला यहां ले आई हूं?, से क्या मतलब है तुम्हारा, तुम्हारे पिताजी तुम्हारे भाई की जिम्मेदारी है । मैंने बड़ा घर वृद्ध आश्रम खोलने के लिए नहीं लिया था, अपने रहने के लिए

लिया हूँ। जायदाद के पैसे हड़पते समय नहीं सोचा था साले साहब ने कि पिता की सेवा भी करनी पड़ेगी। रात दिन करके पैसा कमाता हूँ फालतू लुटाने के लिए नहीं है।

मुझे अपने पति के इस रूप के बारे में पहले जानकारी नहीं थी। शांति बोली “रात दिन मरीजों की सेवा करते हो मेरे पिता के लिए क्या आपके घर और दिल में इतना सा स्थान नहीं है” अमित (दामाद) के चेहरे की नसे तनी हुई थी। वह लगभग चीखते हुए बोला मारीज बीमार पड़ता है, पैसा देता है ठीक होने के लिए। मैं इलाज करता हूँ, पैसा लेता हूँ, उसमें सेवा जैसा कुछ भी नहीं, यह मेरा काम है मेरी रोजी-रोटी है। बेहतर होगा तुम एक-दो दिन में अपने पिता को गौतम के घर पर छोड़ आओ। शांति को अपने कानों पर विश्वास नहीं हो रहा था, जिस पति की वह इतनी इज्जत करती है वह ऐसा बोल सकते हैं क्यों उसने अपने भाई और पति पर इतना विश्वास किया। क्यों? उसने शुरू से ही एक-एक पैसा का हिसाब नहीं रखा।

शांति सरकारी नौकरी करती थी, पति के कहने पर उसने अच्छी खासी नौकरी छोड़ दी। पहले पुत्र के जन्म पर अमित ने यह कहकर नौकरी छुड़वा दी कि, मैं इतना कमाता हूँ, तुम्हें नौकरी करने की क्या आवश्यकता है, तुम्हें किसी चीज की कमी नहीं रहेगी आराम से घर रहकर बच्चों की देखभाल करो। आज अगर नौकरी कर रही होती तो अलग से कुछ पैसे होते उसके पास, पिताजी की देखभाल अपने दम पर कर पाते, “कहने को तो हर महीने बैंक में उसके नाम के खातों में पैसा जमा होते हैं लेकिन खर्च करने की बिना पूछे उन्हें इजाजत नहीं थी।”

भाई से भी, मन कर रहा था कह दें शादी में जो खर्च हुआ था वह निकाल कर जो बचता है। उसका आधा-आधा कर दे कम से कम पिता इज्जत से तो जी पाएंगे। पति और भाई दोनों को पंक्ति में खड़ा करके बहुत से सवाल करने का मन कर रहा था। जानते थे कि जवाब कुछ न कुछ अवश्य होंगे लेकिन इस सवाल जवाब में रिश्तों की परत-परत दर खुल जाएगी और जो नग्नता सामने आएंगे। उसके बाद रिश्ते ढोने मुश्किल हो जाएंगे रिस्ता बोझ सा लगने लगेगा। सामने तस्वीर में से झांकने पर एक जोड़ी आंखें और जीभ पर ताला डाल रहे थे।

अगले दिन अमित के अस्पताल जाने के बाद, जब नाश्ता लेकर शांति बाबूजी के पास पहुंची तो वह सामान बांध रहे थे, उदासी भरे स्वर में बोले मेरे कारण अपनी घर गृहस्थी मत खराब कर पता नहीं कितने दिन है मेरे पास - कितने नहीं, मैं वृद्ध आश्रम में बात कर ली है जितने मेरे पास पैसे हैं उसमें मुझे वे लोग रखने को तैयार हैं। यह ले पता तू मुझे वहां छोड़ आ, और निश्चित होकर अपनी घर गृहस्थी संभाल, शांति समझ गई “बाबूजी कमजोर है, शरीर अस्वस्थ है परंतु दिमाग तो अस्वस्थ नहीं है कमजोर नहीं है”। दामाद काम पर जाने से पहले मिलने भी नहीं आया? बात है, ससुर का आना उसे अच्छा नहीं लगा क्या सफाई देती चुपचाप टैक्सी बुलाकर उनके लिए उनके दिए पते पर उन्हें छोड़ने चल दी। शांति अपने बाबू जी से नज़र भी नहीं मिल पा रही थी, ना कुछ बोलते बन रहा था। बाबूजी ने ही उसका हाथ दबाते हुए कहा परेशान मत हो बिटिया “परिस्थितियों पर कब हमारा बस चलता है, मनुष्य परिस्थितियों का दास है, परिस्थिति मनुष्य के दास नहीं हुआ करते” मैं यहां अपने हम उम्र लोगों के बीच खुश रहूंगा। बात करते-करते मैं और बाबूजी वृद्ध आश्रम पहुंच गये।

तीन दिन हो गए थे, बाबूजी को वृद्ध आश्रम छोड़े हुए, शांति का ना किसी से बोलने का मन कर रहा था और ना कुछ खाने का, फोन करके पूछने की हिम्मत नहीं हो रही थी कि वह कैसे हैं, इतनी ग्लानी थी कि किस मुंह से पूछे ? इतने मैं वृद्ध आश्रम से फोन आया कि बाबूजी अब इस दुनिया में नहीं रहे ।

10:00 बजे थे, बच्चे पिकनिक पर गए थे आठ - नौ बजे तक अमित आएंगे, गौतम तो ऑफिस से आते 10:00 बजे तक ही है, किसी की दिनचर्या पर कोई असर नहीं पड़ेगा किसी को सूचना भी क्या देना गौतम ऑफिस चला गया होगा बेकार छुट्टी लेनी पड़ेगी, रास्ते भर अविरल अश्रु धारा बहती रही कहना मुश्किल था कि “पिता के जाने का गम हैं या अपनी बेबसी का” आखिरी समय पर पिता के लिए कुछ भी नहीं कर पाई । दो-तीन दिन केवल अमित (दामाद) ने उसके पिता को मान-सम्मान और आश्रय दिया होता तो हृदय से पति को परमेश्वर मानती, वृद्ध आश्रम के संचालक महोदय के साथ मिलकर उसने औपचारिकताएं पूरी की, वह बोल रहे थे उनके बहू, बेटा, और दामाद भी हैं, रिकॉर्ड के हिसाब से उनको भी सूचना दे देते तो अच्छा रहता । वह कुछ संभल चुकी थी । “बोली नहीं इसका कोई नहीं है, ना बहू ना बेटा और ना दामाद बस एक बेटी है वह भी नाम की” संचालक महोदय ने अपनी वृद्ध आश्रम की सारी कार्यवाही पूरी करके शांति को पिता का पार्थिव शरीर सौंप दिया । शांति सोच रहे थे बाबूजी की आत्मा को शांति मिल ही गई होगी, जाने से पहले सबसे मोह भंग हो गया था समझ गए होंगे कि कोई किसी का नहीं होता, फिर क्यों आत्मा अशांत होगी? हां परमात्मा उसे इतनी शक्ति दे कि किसी तरह से वह बहन और पत्नी का रिश्ता निभा सके । सच कहता है संसार में कोई सगा - संबंधी अपना नहीं होता है ।

ठीक ही कहा है संत कबीर साहेब ने “जब लग पैसा पास यार संग संग डोले । पैसा रहे ना पास यार मुख नहीं बोले ।।”

रिश्तो का क्या, यह रिश्ते दिखावा है बस हर मनुष्य अपने दायित्वों से बंधा हुआ है उनकी पूर्ति के लिए दिन-रात लगा है और परिणाम स्वरूप उसे मिलता क्या है कुछ नहीं एक अंश मात्र शांति के लिए पुत्र का भी सहारा नहीं, अपने सागों का सहारा नहीं, अपने संबंधों का सहारा नहीं ऐसे रिश्ते और संबंधों के किया मायने ?

“यह संसार फूल सेमल को, सुंदर देखि लुभायो ।

छुवन लागे रुयी सी उर गई हाथ कछू नहीं आयो ।।”

यह संसार सेमल की फूल की तरह लुभावन और सुंदर है पर इस सेमल के फूल का फल जो है जिसमें रूई रहता है, छूने के बाद उड़ जाता है ।

“सुगना रे तो जोगत रहिये सेमल के सुन्दर लाल फूल को ।

फल होहिये नीरस पछिताहिये अपने भूल को ।।”

कवि कहता है कि सुग्गा (तोता), जब सिमर के पेड़ के टहनी पर बैठ कर सुंदर लाल फूल, को फल होने तक की आशा में बैठता है, और सोचता है जब फूल इतने सुंदर हैं तो फल कितना सुंदर होगा लेकिन जब फूल, फल में बदल जाता है तो उसका स्वाद कितना नीरस और बेस्वाद और बेकार होता है, ठीक उसी प्रकार आज मनुष्य के रिश्ते का हाल है । विश्वास नहीं होता इतने सुन्दर रिस्तों में कितना स्वार्थ भरा है ।



जंगल की गुफा का रहस्य



मोना बंसल/ स ले प अधिकारी

माया एक छोटे से शहर में रहती थी। उसे रहस्यों को सुलझाना बहुत पसंद था। उसके शहर के पास एक बड़ा जंगल था। लोग कहते थे कि उस जंगल में एक पुरानी गुफा छिपी हुई है, जहाँ कई सालों से कोई नहीं गया था। कुछ लोग यह भी कहते थे कि रात में वहाँ अजीब-सी रोशनी दिखाई देती है।

माया को यह बात बहुत दिलचस्प लगी। एक दिन वह शहर की पुरानी लाइब्रेरी में गई। वहाँ उसे एक पुराना नक्शा मिला। उस नक्शे पर जंगल के बीच एक जगह पर अजीब सा निशान बना था। नक्शे के साथ एक छोटा सा संदेश लिखा था—"इस गुफा में एक पुराना रहस्य छिपा है, जिसे दुनिया भूल चुकी है।"

माया ने उस रहस्य को खोजने का फैसला किया। अगले दिन वह अपना आवश्यक सामान लेकर जंगल की ओर निकल पड़ी। जैसे-जैसे वह जंगल के अंदर जाती गई, शहर की आवाजें पीछे छूट गईं। चारों ओर पेड़ों की आवाज और पक्षियों की चहचहाहट सुनाई दे रही थी।

कई घंटे चलने के बाद उसे पेड़ों और बेलों के पीछे एक छिपा हुआ रास्ता मिला। वह रास्ता उसे एक बड़ी पत्थर की गुफा तक ले गया। गुफा के बाहर वही निशान बना था जो पुराने नक्शे पर था।

माया धीरे-धीरे गुफा के अंदर गई। अंदर की दीवारों पर चमकदार पत्थर लगे थे, जो हल्की नीली रोशनी दे रहे थे। आगे बढ़ने पर उसे कुछ पुराने डिब्बे मिले। उनमें पुरानी तस्वीरें, किताबें और कुछ अजीब चीजें रखी थीं। उन किताबों में एक वैज्ञानिक डॉ. एलियास की डायरी थी, जो कई साल पहले गायब हो गए थे। डायरी पढ़कर माया को पता चला कि डॉ. एलियास ने इस गुफा में शहर के पुराने इतिहास से जुड़ी कई महत्वपूर्ण बातें खोजी थीं। लेकिन उनकी डायरी का आखिरी हिस्सा गायब था।

माया ने गुफा में ध्यान से खोज शुरू की। थोड़ी देर बाद उसे एक पत्थर के पीछे छिपा हुआ कमरा मिला। कमरे के अंदर डायरी का आखिरी हिस्सा और एक पत्र रखा था।

पत्र में लिखा था—"अगर तुम्हें यह जगह मिली है, तो इसका मतलब है कि आज भी कुछ लोग सच्चाई को जानना चाहते हैं। सबसे बड़ा रहस्य गुफा में नहीं, बल्कि इस बात में है कि लोग सच्चाई की रक्षा करेंगे या नहीं।"

माया ने सारी जानकारी शहर में वापस लाकर लोगों को बताई। उसकी वजह से शहर के लोग अपने पुराने इतिहास के बारे में जान पाए। सभी ने माया की तारीफ की और उसे जंगल की गुफा का रहस्य सुलझाने वाली बहादुर लड़की कहा।

उस रात माया बहुत थक गई थी। उसने वह पुराना नक्शा अपने पास रखा और सो गई।

अचानक उसे जंगल की आवाजें सुनाई देने लगीं। पक्षियों की आवाज। पेड़ों के पत्तों की सरसराहट। और कोई धीरे से उसका नाम पुकार रहा था। माया ने अपनी आँखें खोलीं।

वह अपने बिस्तर पर थी। सुबह हो चुकी थी और खिड़की से शहर की आवाजें आ रही थीं। उसने सोचा कि गुफा, डायरी और पूरा रोमांच शायद सिर्फ एक सपना था।

लेकिन तभी उसकी नजर अपने पास रखे पुराने नक्शे पर पड़ी। उसका दिल तेज धड़कने लगा।

वह वही नक्शा था जो उसने सपने में देखा था। लेकिन अब उसमें एक नया निशान बना हुआ था।

वही निशान जो गुफा के बाहर पत्थर पर बना था।

माया चुपचाप उस नक्शे को देखती रही।

उसे समझ नहीं आया कि वह सच में जाग गई थी या उसका रहस्य अभी शुरू ही हुआ था।



अपनी सुरक्षा, अपने हाथ



-जे पुष्पला /व ले प अधिकारी

मैं अपने पति समेत बेंगलुरु से चेन्नई कार से आ रही थी। उस समय जब हम कृष्णगिरि-होसुर सड़क के पास पहुँचे, तो हमारी कार दो भारी वाहनों (ट्रकों) के बीच चल रही थी। कुछ ही समय में हमारी कार के पीछे चल रहे एक भारी वाहन ने हमारी कार को टक्कर मार दी, जिससे कार घूम गई। इस वजह से नियंत्रण खोकर हमारी कार बीच सड़क पर बने मीडियन पर चढ़कर फंस गई। हमारे साथ क्या हो रहा है, यह समझने में ही हमें कुछ समय लगा।

यदि हमारी कार सड़क के दूसरी तरफ उतर जाती, तो विपरीत दिशा से आने वाले वाहनों से टकराकर हम बिखर गए होते। इस बीच वहाँ एक बड़ी भीड़ जमा हो गई। कार हर तरफ से टूटकर बिखर चुकी थी। तभी एक टैक्सी ड्राइवर ने कुछ लोगों की मदद से कार को सड़क के किनारे खिसकाया और हम दोनों को बाहर निकलने में मदद की। क्या आश्चर्य की बात थी!! हम दोनों को कुछ खास चोट नहीं आई थी। बस, दुर्घटना का एक गहरा सदमा लग गया। हमारी कार की हालत देखकर...हमें देखने वाले लोग यही सोचेंगे कि हमारा जीवित बचना बहुत बड़ा चमत्कार या आश्चर्य की बात है। वह इतनी भयानक दुर्घटना थी कि उससे हमारे बचने का मुख्य कारण सीट बेल्ट ही थी। हम दोनों जब भी कार में बैठते हैं, तो सबसे पहले सीट बेल्ट लगाते हैं और उसके बाद ही अपनी यात्रा शुरू करते हैं। इसी तरह, कार को रोकने और नीचे उतरते समय ही हम उसे खोलते हैं।

चूँकि उस सीट बेल्ट ने हमें कसकर थामे रखा था, इसी वजह से हम जीवित बच पाए। अगर कोई कहे कि सीट बेल्ट जीवन रक्षक बेल्ट है, तो इस पर विश्वास किया जा सकता है। वह हमारे लिए उस हद तक मददगार साबित हुई।

यात्रा करते समय किसी भी समय कोई भी दुर्घटना हो सकती है। या ऐसा भी हो सकता है कि कुछ न हो। यह निश्चित है कि परिस्थितियाँ हमेशा एक जैसी नहीं रहतीं। खतरनाक समय में खुद को सुरक्षित रखने के लिए सीट बेल्ट पहनना अनिवार्य और बेहद आवश्यक है। कुछ लोग यह कहकर इसे पहनने से मना कर देते हैं कि यह बहुत कसी हुई महसूस होती है।

कार से लंबी दूरी की यात्रा करने वाले लोग सीट बेल्ट पहनना कभी न भूलें। दूसरी बात यह है कि यात्रा करते समय कभी भी भारी वाहनों -जैसे ट्रक या बसों- के बीच कभी न चलें। यात्रा के दौरान इन दोनों बातों को याद रखना और उनके अनुसार चलना हमारे जीवन को उचित सुरक्षा प्रदान करेगा, यह बात मैंने अपने व्यक्तिगत अनुभव से गहराई से महसूस की है।

कार दुर्घटनाओं में सीट बेल्ट की तरह, दुपहिया वाहनों में सबसे अधिक दुर्घटनाएं होती हैं। दुपहिया वाहनों में अधिक जोखिम के कारण है -सुरक्षा कवच की कमी, सड़कों की खराब स्थिति और असंतुलन का खतरा। कारों की तरह मोटरसाइकिल में सुरक्षात्मक मेटल बॉडी या एयरबैग नहीं होते हैं। गड्ढे, निर्माण कार्य, और बारिश का पानी दुपहिया वाहनों का संतुलन तुरंत बिगाड़ देते हैं।

खराब सड़कों पर अचानक ब्रेक लगाने से वाहन के फिसलने का खतरा सबसे ज्यादा होता है।

हेल्मेट की अनिवार्यता , जरूरी स्ट्रैप बांधना और सुरक्षित ड्राइविंग, महत्वपूर्ण सुरक्षा उपाय है ।

सिर की गंभीर चोट से बचने के लिए चालक और पीछे बैठने वाले (पिलियन राइडर), दोनों को हेलमेट पहनना अनिवार्य है। हेलमेट तभी सुरक्षा देता है जब उसकी पट्टी मजबूती से बंधी हो। यह मानकर चलें कि बड़े वाहनों को आप दिखाई नहीं दे रहे हैं, और खराब सड़कों पर अतिरिक्त दूरी बनाए रखें।

नाबालिगों द्वारा वाहन चलाना , माता-पिता की जिम्मेदारी होती है। भारी जुर्माना और सजा, लाइसेंस पर रोक आदि को न्योता देना है। यदि कोई नाबालिग बिना लाइसेंस के वाहन चलाता है, तो ट्रैफिक नियमों के तहत माता-पिता को भारी जुर्माना और जेल की सजा हो सकती है। गैर-कानूनी तरीके से वाहन चलाने वाले नाबालिग 25 वर्ष की आयु तक ड्राइविंग लाइसेंस पाने के लिए अयोग्य हो सकते हैं।

इन सबका रोकथाम यही है कि वाहन की चाबियां सुरक्षित रखें और बच्चों को केवल मनोरंजन या दिखावे के लिए वाहन न देने की सख्त हिदायत दें।

जय हिन्दी

जे पुष्कला /व ले प अधिकारी



अभी अभी मैं अपने पति के साथ सैर करने के लिए उत्तर भारत गयी थी। "जहाँ भी चलें मैं अपनी अंग्रेजी भाषा में बातचीत करके सम्भालूँ - मेरे पति ऐसी गलत गर्व विचार में थे। वे मुझसे यह जानने की कोशिश नहीं की कि मुझे हिंदी मालूम है या नहीं।

पहले हम उत्तर भारत के एक जिले में उतरे। वे लोग हिंदी के सिवा कोई अन्य भाषा नहीं जानते थे। इसलिए सिर्फ अंग्रेजी जाननेवाले पति को निराशा ही मिला। क्या बात है यह ? कैसी मुसीबत आन पड़ी ? इनका परिचय मुझे कैसे मिलेगा ?-इसी असमंजस में थे . में आसानी और सरलता से उनसे हिंदी में बातचीत करके मेरे पति को अचरज में डाला। झट से मेरे पति से सवालियों के बोझार हुए - "क्या तुम हिंदी में बोल सकती हो ? मुझे नहीं मालूम की तुम हिंदी जानती हो। हिंदी में बोलना कब और कहाँ सीखा ?

"हमारे दफ्तर में काम करनेवाले आधा से ज्यादा लोग उत्तर भारत के हैं। वे हमसे तमिल भाषा सीखते और हम उनसे हिंदी भाषा। आखिर वे भी तमिल में बोलते हैं और हम भी उनसे हिंदी में बातचीत करते हैं। यही जवाब मैंने उनको दिया। हम हमेशा बक बक करते हैं कि उत्तर भारत के लोग यहां आकर हमारी नौकरी छीन लेते हैं। लेकिन उनसे मिलकर हमें हिंदी की जानकारी ही नहीं बल्कि आसानी से देश भर भ्रमण करके कई तरह से लाभान्वित हो सकते हैं। हमें इन बातों को ध्यान में रखना चाहिए। हम दफ्तर में काम करनेवाले उत्तर भारतियों को अपने भाई- बहन मानकर स्नेह पूर्वक मिलजुल कर आनंद में रहेंगे। आश्चर्य की बात है की चेन्नई वापस आकर झट से मेरे पति ने हिंदी भाषियों के संपर्क में हिंदी सीखना शुरू किया।

सच ही है की हमारे हिंदी वार्तालाप,अवश्य, विविधता में एकता आपस में पैदा करके उन्नति पाएंगे ।

भ्रमात्मक सुकून



वेंकटेश एम /लेखापरीक्षक

तूफानी समय-धारा की मेरी यात्रा से थककर, मैंने विश्राम करने के लिए सुकून और सुरक्षा से भरी जगह की इच्छा की थी। और वह मुझे मिल भी गया। वह ऐसा सुकूनदेह और आरामदायक था मानो स्वर्ग में हों।

तथापि, एक सुहानी रात, अपनी लंगर-व्यवस्था खो बैठने के कारण, मैं बह चला, अथाह समुद्र में तैरते हुए। पैदल चलने या आगे बढ़ने का वह जुनून और वह आंतरिक कंपास जिसने अब तक मेरा मार्गदर्शन किया था, अब काम नहीं कर रहे थे। बहाव की उस सुस्ती ने मुझे अपनी ओर खींच लिया, जिससे मेरी चेतना धुंधली हो गई।

शीघ्र ही, ठीक उसी समय जब पछतावे की लहर मुझे डुबोने के लिए आई, अंधकार के आवरण को चीरते हुए प्रकाश की एक किरण फूटी। लेज़र जैसी तीव्र और तेज।



मेरे अतीत की याद दिलाते हुए, इसने मेरे स्व-बोध में जान फूँकी, जो चारों ओर की उस निशब्दता से बिल्कुल अद्वितीय था। अपने उस उद्देश्य, जो मुझे शुरुआत में इस खतरनाक यात्रा पर उतरा था, के साथ मैंने अज्ञात की ओर अपनी खोज जारी रखी।

जैसे ही मैंने नए जोश के साथ अनिश्चित भविष्य में कदम रखा, मैं उस लहर से पूरी तरह अवगत था जो मेरे आलस्य पर झपटने के लिए मेरा अनुगमन कर रही थी।

किसी अन्य व्यक्ति के लिए मार्गदर्शकीय प्रकाश बनने की यह उम्मीद, यदि मेरी यात्रा निष्फल साबित हो जाती है, तो यह विलुप्त हो जाने के विरुद्ध मेरे कवच के रूप में कार्य करती है और मुझे हर खतरे का सामना करने की प्रेरणा देती है।

डिलन थॉमस की इस बात को याद रखना उचित होगा, "उस सुहावनी रात में आसानी से मत जाना। मरते प्रकाश के विरुद्ध क्रूर, क्रूर विरोध करना।"



"संसार के सभी जीवों के प्रति मन में दया का भाव रखना ही सच्चा धर्म है।"- ऋग्वेद

सहानुभूति के साथ पढ़ाना



- एलंगोवन एन/स ले प अधिकारी

मौसम बहुत सुहावना था, सूरज ढलने की तैयारी में था और पश्चिम की ओर जा रहा था। पास की मस्जिद से अज्ञान की आवाज़ सुनकर कबूतर मस्जिद के ऊपर उड़ रहे थे। मैदान में छात्र खेल रहे थे और शारीरिक शिक्षा के अध्यापक उन्हें स्कूल की सालाना खेल प्रतियोगिता के लिए तैयार कर रहे थे। माहौल में काफी जोश था; कुछ छात्र सालाना कार्यक्रम के लिए डांस की प्रैक्टिस कर रहे थे। के आर एम पब्लिक स्कूल में 12वीं क्लास का छात्र हरीश क्लास की खिड़की से बाहर देख रहा था। उसकी नज़रें मैदान में खेल रहे छात्रों पर टिकी थीं।

क्लास अध्यापक हरीश ने छात्रों को खेल के मैदान में अभ्यास के लिए जाने को कहा। छात्र खेल के मैदान में जाने की तैयारी कर रहे थे। क्लास अध्यापक छात्रों द्वारा दिए गए असाइनमेंट की जाँच कर रही थीं और उनकी नज़र हरीश की गतिविधियों पर भी थी।

हरीश क्लास का एक होशियार स्टूडेंट था। इंग्लिश पर उसकी पकड़ बहुत अच्छी थी। स्कूल के प्रिंसिपल ने वी आइ टी कॉलेज में होने वाली इंटर-स्कूल मीट में स्कूल को रिप्रेजेंट करने के लिए हरीश को चुना। हरीश का शांत स्वभाव और एयरोनॉटिक्स की उसकी जानकारी स्कूल में चर्चा का विषय था। स्कूल के दौरान जितने भी अध्यापकों से वह मिला, उन सभी की हरीश के बारे में बहुत अच्छी राय थी।

लेकिन, पिछले कुछ हफ्तों से हरीश का ध्यान भटकने लगा था। क्लास में जब अध्यापक पढ़ाते थे, तो उसका ध्यान कहीं और ही होता था। क्लास अध्यापक और दूसरे अध्यापकों ने भी इस बात पर ध्यान दिया। अध्यापकों की साप्ताहिक मीटिंग में हरीश के व्यवहार में आए इस अचानक बदलाव पर चर्चा हुई। अध्यापकों को चिंता होने लगी कि कहीं हरीश गलत संगत में तो नहीं पड़ गया है। उन्होंने तय किया कि इससे पहले कि मामला हाथ से निकल जाए, हरीश के माता-पिता को इस बारे में बता दिया जाए, क्योंकि हरीश क्लास का एक होनहार छात्र है और उसमें भाषा को प्रस्तुत करने की बेहतरीन क्षमता है। हरीश ने टेड-एक्स प्रतियोगिता में हिस्सा लिया था और स्कूल के लिए कई पुरस्कार जीते थे।

हरीश के माता-पिता को बताने से पहले, शिक्षक उस बुरी संगत का पता लगाना चाहते थे जिसके साथ हरीश हाल ही में जुड़ा था। वह हमेशा आराम से क्लास से निकलता था, लेकिन कुछ हफ्तों से उसे स्कूल से बहुत तेज़ी से बाहर निकलते और शाम को अपनी साइकिल बहुत तेज़ी से चलाते हुए देखा जा रहा था।

अध्यापकों की मीटिंग में वे यह तय नहीं कर पाए कि पढ़ाई से हरीश का ध्यान अचानक क्यों हट गया।

क्लास अध्यापक मीटिंग से बाहर आए और उन्होंने हरीश के घर जाकर उसके माता-पिता को उसके व्यवहार में आए अचानक बदलाव के बारे में बताने का फैसला किया।

अगले दिन सुबह स्कूल असेंबली में हरीश ने आइ एस आर ओ के नए सैटेलाइट लॉन्च के बारे में बहुत आसान भाषा में विस्तार से बताया, ताकि सभी छात्र इसे समझ सकें। स्कूल असेंबली में उसकी अच्छी प्रस्तुति के लिए प्रिंसिपल ने उसे बधाई दी। लेकिन क्लास अध्यापक के मन में यह बात घूम रही थी कि आखिर क्लास में हरीश के अचानक सुस्त हो जाने की असली वजह क्या है। आज क्लास अध्यापक ने हरीश के घर जाने और उसके माता-पिता को इस बारे में बताने का फैसला किया। क्लास में घड़ी में शाम के 4:00 बज गए और स्कूल की घंटी ज़ोर से बजी, जो स्कूल से छुट्टी का संकेत था। हमेशा की तरह, हरीश अपनी साइकिल लेने के लिए दौड़ रहा था, इससे पहले कि कोई और उसकी साइकिल को नीचे गिरा दे।

किसी ने हरीश के घर का दरवाज़ा खटखटाया। हरीश की माँ, सुश्री कविता इलांगोवन ने दरवाज़ा खोला और पाया कि हरीश की क्लास अध्यापक वहाँ खड़ी थीं। सुश्री कविता ने क्लास अध्यापक सुश्री षण्मुगप्रिया का घर में स्वागत किया और उनसे बातचीत करके उन्हें बहुत खुशी हुई।

क्लास अध्यापक प्रिया को बिस्किट के साथ गर्म कॉफी दी गई और हरीश की माँ, सुश्री कविता ने स्कूल के विषयों में हरीश के परफॉर्मेंस के बारे में पूछा। क्लास अध्यापक ने पूछा कि हरीश कहाँ है? हरीश की माँ क्लास अध्यापक को उसी कंपाउंड में बने अगले घर में ले गई; वहाँ क्लास अध्यापक ने एक दिल को छू लेने वाला नज़ारा देखा, जिसे देखकर उनकी आँखों से आँसू बहने लगे और वे कुछ देर तक कुछ बोल नहीं पाई।

घर छोटा-सा था, जिसमें एक बेडरूम, हॉल, किचन और अंदर ही एक बाथरूम था। घर के अंदर की गंध से पता चल रहा था कि अंदर कोई बीमार व्यक्ति है। बेडरूम के अंदर हरीश अपने बिस्तर पर पड़े दादाजी की मदद कर रहा था; वह उनका डायपर बदल रहा था जो पेशाब और मल से भरा हुआ था। उसने शांति से एक हाथ से दादाजी को करवट दिलाई, एक तरफ तकिया लगाया और चेहरे पर हल्की मुस्कान के साथ उनके प्राइवेट पार्ट्स को साफ़ किया। उसने पुराने डायपर की जगह नया डायपर लगाया और प्राइवेट पार्ट्स, पैरों और पेट के हिस्से पर रेशेज़ से बचाने के लिए कैंडिड पाउडर छिड़का। फिर उसने दादाजी से पूछा, "दादाजी, दादाजी, क्या डायपर बदलते समय आपको दर्द हुआ?" दादाजी की आँखों से आँसू बह रहे थे, उन्होंने "नहीं" कहा और अपनी पुरानी यादों में खो गए—जब हरीश छोटा बच्चा था, तो वे उसे रोज़ चलती ट्रेन दिखाने रेलवे स्टेशन ले जाते थे, और अब वे हरीश के लिए कुछ नहीं कर सकते थे, बस उसके अच्छे भविष्य के लिए आशीर्वाद ही दे सकते थे।

अध्यापक ने यह देखा और समझा कि दादाजी की अचानक खराब तबीयत की वजह से उसकी पढ़ाई पर असर पड़ा है। इसलिए उन्होंने तय किया कि स्कूल के समय में वे उस पर थोड़ा ज़्यादा ध्यान देंगे ताकि उसकी पढ़ाई वैसी ही हो सके जैसी पहले थी।

अध्यापक ने हरीश को बुलाया, उसे भावुक होकर गले लगाया और कहा कि स्कूल में सीखा गया कोई भी पाठ—चाहे वह गणित हो या विज्ञान—उसके बूढ़े दादाजी के प्रति दिखाई गई इंसानियत और दयालुता की बराबरी कभी नहीं कर सकता; और आखिर में, तमाम मुश्किलों के बावजूद इंसानियत ही जीतती है।

सहानुभूति के साथ शिक्षा एक ऐसा शिक्षण तरीका है जिसमें पढ़ाई-लिखाई के साथ-साथ छात्र की भावनाओं, परिप्रेक्ष्य और निजी चुनौतियों की गहरी और सक्रिय समझ को भी शामिल किया जाता है।



खुशी और दयालुता



-एल. अभिरामी, व ले प अधिकारी

खुशी एक मानसिक अवस्था है। यह हमारे भीतर ही होती है। सच्ची खुशी को किसी उपलब्धि से जोड़कर महसूस नहीं किया जा सकता, चाहे वह भौतिक हो या अन्यथा। सच्ची खुशी हमेशा भीतर से आती है। यदि हम इसे समझ लें, तो कोई भी हमारी खुशी हमसे छीन नहीं सकता। इंसान होने के नाते हम अक्सर खुशी को बाहर खोजते हैं। जब हमें अपनी इच्छा पूरी होती है, तो हम खुश होते हैं। जब हमें इच्छा पूरी नहीं होती, तो हम दुखी हो जाते हैं। यदि हम अपनी खुशी को किसी लक्ष्य को पाने या कुछ खरीदने से जोड़ते हैं, तो इसका कोई अंत नहीं होता। जब हम अपने आस-पास की छोटी-छोटी चीज़ों पर ध्यान देना शुरू करते हैं जो हमें आनंद देती हैं, तब हम जीवन का आनंद लेना शुरू करते हैं। रोज़मर्रा की ज़िंदगी में हम सफलता, प्रसिद्धि, धन, शक्ति आदि के पीछे इतने व्यस्त रहते हैं कि उसी चक्र में फँस जाते हैं और बाहर नहीं निकल पाते। यदि हम इससे बाहर

निकलने की कोशिश करें और प्रकृति द्वारा दी गई छोटी-छोटी सुंदर चीजों को देखें, तो हमें वास्तव में शांति मिलेगी। जब हमारा मन शांत और स्थिर होता है, तो हम स्वाभाविक रूप से बेहतर निर्णय लेने, बेहतर एकाग्रता रखने और अधिक स्पष्टता प्राप्त करने की स्थिति में होते हैं।

जब हम रोज़मर्रा की सुंदर चीजों को देखना शुरू करते हैं जैसे पेड़ों की हरियाली, बड़े लकड़ी के तने, पेड़ पर चहचहाते पक्षी, विभिन्न आकारों में सुंदर बादल, ठंडी सुबह में ज़रूरी धूप, खिड़की पर गिरती बारिश की बूंदें, एक अजनबी कुत्ते की पूँछ हिलाना, बच्चे की मुस्कान आदि, तो हमें एहसास होगा कि खुशी बड़ी चीजों में नहीं बल्कि इन छोटे-छोटे पलों में है। अंततः हम अपने आस-पास की हर चीज़ की सराहना करना शुरू कर देंगे जिससे कृतज्ञता की भावना विकसित होगी। निश्चित रूप से, इंसान की इच्छाओं का कोई अंत नहीं है। हम कभी साइकिल खरीदने की इच्छा रखते थे। साइकिल खरीदने के बाद हम बाइक चाहते हैं, फिर कार, फिर बेहतर कार और यह सिलसिला चलता रहता है। हालांकि इंसान के रूप में हमारी इच्छाएँ अनंत हैं, हमें उन सभी चीज़ों के लिए आभारी होना सीखना चाहिए जो हमारे पास पहले से हैं।



हमें सभी जीवियों के प्रति दयालुता, सहानुभूति और करुणा भी विकसित करनी चाहिए। दयालुता के सरल कार्य हमेशा स्थायी प्रभाव डालते हैं। इसी तरह, सराहना के दयालु शब्द दूसरों को खुश करने में बहुत मदद करते हैं। जब हम किसी की सच्चे मन से प्रशंसा करते हैं, तो हम भी खुश होते हैं और जिसकी प्रशंसा की जाती है वह भी खुश होता है। ईर्ष्या, घृणा, तुलना और अहंकार को अलग रखकर जब हम पूरे दिल से किसी के प्रयासों की सराहना करते हैं, तो यह उस व्यक्ति के लिए आनंददायक बन जाता है।

हर किसी की अपनी समस्याएँ और तनाव होते हैं। इसलिए, मुस्कान या उनके प्रयासों की सराहना जैसी छोटी चीज़ें निश्चित रूप से उनके मूड को बदल देंगी और उनके मनोबल को सकारात्मक रूप से बढ़ाएँगी। धीरे-धीरे, इसका उनके जीवनशैली पर भी सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा।

दयालुता के यादृच्छिक कार्य सबसे सुंदर चीज़ हैं। जैसे कोई अजनबी आपके लिए लिफ्ट का दरवाज़ा पकड़ ले- जब आप दौड़ते हुए आते हैं, कोई व्यक्ति रास्ता दे - जब दूसरा जल्दी में हो, कोई बस या ट्रेन में अपनी सीट छोड़ दे, कोई

आपकी प्रशंसा करे, कोई प्रोत्साहन के शब्द साझा करे, कोई बिना कहे मदद का हाथ बढ़ा दे आदि—ये कुछ उदाहरण हैं दयालुता के यादृच्छिक कार्यों के जिन्हें हम रोज़मर्रा की ज़िंदगी में देखते हैं।

एक सुंदर कहावत है “जैसी करनी वैसी भरनी”। जब हम अपने रोज़मर्रा के जीवन में दयालुता के छोटे-छोटे कार्यों का अभ्यास करते हैं, तो ये कार्य एक तरंग प्रभाव पैदा करते हैं, जिससे हमारे आस-पास के लोग भी दयालु बन जाते हैं! एक ऐसी दुनिया में जहाँ आप कुछ भी बन सकते हैं—**दयालु बनें!**

आइए हम सब छोटे-छोटे दयालुता के कार्यों का अभ्यास करें ताकि दुनिया को एक बेहतर जगह बना सकें!



काम भी, जीवन भी: संतुलन ही असली सफलता



-एम रश्मि/सहायक पर्यवेक्षक

सुबह उठने से लेकर रात तक हमारी जिंदगी किसी न किसी काम में व्यस्त रहती है। ऑफिस जाना, समय पर काम पूरा करना, घर की जिम्मेदारियां निभाना—इन सबके बीच कई बार ऐसा लगता है कि अपने लिए समय ही नहीं बचता। आज की भागदौड़ भरी जिंदगी में काम और निजी जीवन के बीच संतुलन बनाए रखना बहुत जरूरी हो गया है।

काम हमारी जिंदगी का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। हम अपने काम को पूरी जिम्मेदारी और ईमानदारी से करना चाहते हैं। काम पूरा होने पर मिलने वाली संतुष्टि भी अलग होती है। लेकिन लगातार काम करते रहना और हर समय ऑफिस के बारे में सोचते रहना हमें थका सकता है। इसलिए जरूरी है कि हम काम को बोझ न समझें, बल्कि उसे सही तरीके से व्यवस्थित करना सीखें।

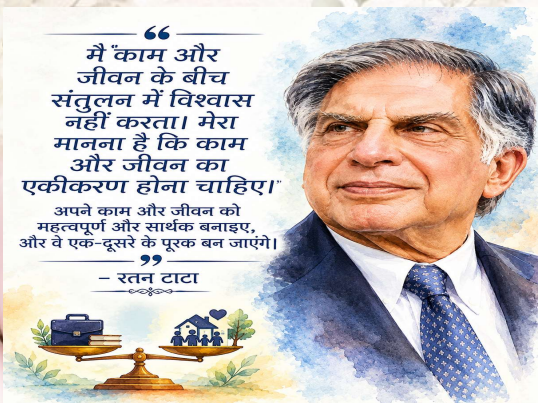
थोड़ा सा प्लान, बहुत सारा आराम: कई बार काम ज्यादा होने से नहीं, बल्कि काम को सही तरीके से व्यवस्थित न करने से तनाव बढ़ता है। अगर हम दिन की शुरुआत में यह तय कर लें कि आज कौन-से काम जरूरी हैं और उन्हें किस क्रम में करना है, तो काम काफी आसान हो जाता है। हर काम को एक साथ करने की कोशिश करने के बजाय एक-एक करके पूरा करना ज्यादा बेहतर है।

काम के बीच छोटे-छोटे ब्रेक लेना भी जरूरी है। लगातार कंप्यूटर के सामने बैठे रहने या बिना रुके काम करने से थकान बढ़ती है। कुछ मिनट के लिए अपनी सीट से उठना, थोड़ा चलना या सहकर्मियों से सामान्य बातचीत करना भी मन को हल्का कर सकता है।

ऑफिस के बाद खुद के लिए समय: ऑफिस का काम खत्म होने के बाद जितना संभव हो, उतना समय परिवार और अपने लिए निकालना चाहिए। परिवार के साथ बैठकर बात करना, दोस्तों से मिलना, संगीत सुनना, किताब पढ़ना, घूमना या अपनी पसंद का कोई काम करना मन को खुश रखता है।

आज मोबाइल और इंटरनेट ने काम को हमारे घर तक पहुंचा दिया है। इसलिए जरूरी है कि जहां संभव हो, ऑफिस का काम खत्म होने के बाद कुछ समय के लिए मोबाइल और काम से दूरी बनाई जाए। इससे दिमाग को आराम मिलता है और अगले दिन हम ज्यादा ऊर्जा के साथ काम कर पाते हैं।

स्वास्थ्य को नजरअंदाज न करें: काम कितना भी जरूरी क्यों न हो, स्वास्थ्य उससे कम महत्वपूर्ण नहीं है। पर्याप्त नींद, समय पर खाना और थोड़ी-सी शारीरिक गतिविधि हमारे शरीर और दिमाग दोनों के लिए जरूरी है। स्वस्थ और खुश रहने वाला व्यक्ति अपने काम पर भी बेहतर ध्यान दे सकता है।



अकेले नहीं, साथ मिलकर: कभी-कभी काम ज्यादा हो जाता है। ऐसे समय में सब कुछ अकेले संभालने की कोशिश करने के बजाय सहकर्मियों से सहयोग लेना बेहतर होता है। जरूरत पड़ने पर अपने वरिष्ठ से बात करना भी बिल्कुल सामान्य बात है। एक-दूसरे की मदद करने वाली टीम में काम का दबाव कम महसूस होता है और काम करने का माहौल भी अच्छा रहता है।

संतुलन का मतलब काम से दूरी नहीं:वर्क-लाइफ बैलेंस का मतलब यह बिल्कुल नहीं है कि काम को कम महत्व दिया जाए। इसका मतलब है कि काम को पूरी जिम्मेदारी से करते हुए अपने स्वास्थ्य, परिवार और व्यक्तिगत जीवन के लिए भी समय निकाला जाए।

जब हम आराम से और सकारात्मक सोच के साथ काम करते हैं, तो हमारी कार्यक्षमता भी बढ़ती है। एक खुश और संतुलित व्यक्ति न केवल अपने काम में बेहतर प्रदर्शन करता है, बल्कि अपने आसपास के लोगों के लिए भी सकारात्मक माहौल बनाता है।

आखिरकार, जिंदगी केवल काम करने का नाम नहीं है। काम हमारी पहचान का एक हिस्सा है, लेकिन परिवार, स्वास्थ्य, रिश्ते और हमारी छोटी-छोटी खुशियां भी उतनी ही महत्वपूर्ण हैं। इसलिए काम को पूरी लगन से करें, लेकिन जीवन को जीना न भूलें। सही मायने में सफलता वही है, जहां काम में संतुष्टि और जीवन में खुशी—दोनों साथ हों।



तिनका



यशवंत कुमार /स ले प अधिकारी

बसेरा चिड़िया ने बनाया,
खाने की खोज में बस यूँ ही निकल गया।
साल दर साल कभी बसेरे में आया,
देखकर रौनक दिल को पिघला दिया।
सोचा, यहीं पंख अपने फैलाऊँगा,
जो खोया है, सब पाकर दिखाऊँगा।
साल दर साल यूँ ही बीत गए तो सोचा,
क्या खोया, जो पाने को था आ गया?
जब पा ही लिया,



तो फिर तलाश अब भी बाकी क्यों ?

फिर जो खोया,
निकला उसी की तलाश में,
फिर जो देखा,
पा लिया तो खुद को वहीं,
बारिशें तो बदल गईं ,
पर तिनका रह गया वहीं ।



मुखपृष्ठ तेरूकूतु के बारे में.....



तेरूकूतु: तमिलनाडु और श्रीलंका के तमिल-भाषी इलाकों में किया जाने वाला तमिल सड़क- नाटक का एक रूप है।
तेरु = गली ; कूतु =नाटक -जो मनोरंजन, रीति-रिवाज और सामाजिक शिक्षा का एक माध्यम है और हिंदू महाकाव्यों, मुख्य रूप से महाभारत, गांव के मंदिर त्योहारों की कहानियां बतानेके लिए तेरूकूतु में अलग-अलग विषयों पर नाटक किए जाते हैं जिसमें पुराण के साथ साथ इतिहास से भी चरित्र लिए जाते है।

इसे पारंपरिक रूप से त्योहारों के दौरान गाँव के चौराहों या मंदिरों के पास रात भर किया जाता है। कलाकार बिना आधुनिक माइक्रोफोन के भी अपनी तेज़ और दमदार आवाज़ में गाते हैं ताकि उनकी आवाज़ बड़ी भीड़ तक पहुँच सके; साथ ही मुखवीणा (सुशिर वाद्य यंत्र) और ड्रम जैसे पारंपरिक वाद्ययंत्र भी बजते हैं। कलाकार शानदार और रंग-बिरंगे ऊँचे सिर के आभूषण, भारी शोल्डर प्लेट, चौड़े स्कर्ट और आकर्षक चेहरे का मेकअप पहनते हैं। एक खास हास्य पात्र(कोमाली) व्यंग्य और मजेदार बातों से दर्शकों का मनोरंजन करता रहता है और महाकाव्य की कहानी को रोज़मर्रा के स्थानीय हास्य से जोड़ता है।



अवसाद



के एस नव्या/ स ले प अधिकारी

अवसाद (डिप्रेशन) आज के समय की एक ऐसी कड़वी सच्चाई है जो इंसान को अंदर ही अंदर खोखला कर देती है। विज्ञान और चिकित्सा जगत की संस्था विश्व स्वास्थ्य संगठन भी यह मानती है कि अवसाद दुनिया में बीमारी और अक्षमता का एक बहुत बड़ा कारण बन चुका है।

आइए इसके कारणों, प्रभावों और बचाव के तरीकों का विस्तार से विश्लेषण करते हैं: आधुनिक जीवनशैली और सोशल मीडिया का प्रभाव को बिल्कुल नकारा ना जा सकता। उम्मीदों का बोझ का तनाव में बहुत बड़ा योगदान है, जो आगे चलकर मायूसी और अवसाद में बदलते हैं। जब जीवन हमारी सोची हुई योजनाओं के अनुसार नहीं चलता, तो निराशा घेर लेती है। आधुनिक समाज में सफलता की परिभाषा केवल पैसों और दिखावे तक सीमित हो गई है, जिससे मानसिक तनाव बढ़ता है।

सोशल मीडिया का भ्रम सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा हो गया है, अवसाद को न्योता देने के लिए। सोशल मीडिया पर लोग अक्सर अपने जीवन के केवल अच्छे और सुनहरे पलों को दिखाते रहते हैं। इसे देखकर दूसरा व्यक्ति अनजाने में ही अपनी तुलना उनसे करने लगता है और खुद को कमतर आंकने लगता है, जिसे मेडिकल भाषा में 'कंपैरिजन सिंड्रोम' कहते हैं।

अकेलापन का भी अवसाद के साथ पुराना रिश्ता है। आज लोग इंटरनेट पर हजारों दोस्तों से जुड़े हैं, लेकिन वास्तविक जीवन में दिल की बात साझा करने के लिए उनके पास कोई नहीं है। "अपनों के लिए समय न होना" इस बीमारी को और

गंभीर बना देता है। अवसाद के छिपे हुए लक्षण हैं इसलिए पहचानना मुश्किल हो जाता है। अवसाद केवल मन की उदासी नहीं है, यह शरीर को भी प्रभावित करता है। छोटी-छोटी बातों पर अत्यधिक गुस्सा या चिड़चिड़ापन होना। किसी भी काम में ध्यान केंद्रित न कर पाना, हर समय मन में नकारात्मक विचार या खुद को नुकसान पहुंचाने के ख्याल आना, लोगों से दूरी बना लेना और अकेले रहने की इच्छा होना इत्यादि मानसिक लक्षण में गिने जाते हैं।



जबकि शारीरिक लक्षण में लगातार सिरदर्द, बदन दर्द या पेट की समस्याएं रहना, नींद का पूरी तरह गायब हो जाना या बहुत ज्यादा नींद आना, भूख का एकदम कम हो जाना या तनाव में बहुत ज्यादा खाना खाना, हर समय अत्यधिक थकान और ऊर्जा की कमी महसूस होना। समय पर इलाज न मिलने के भयावह परिणाम हो सकता है। यदि अवसाद का सही समय

पर इलाज न किया जाए, तो यह व्यक्ति की निर्णय लेने की क्षमता को खत्म कर देता है। गंभीर मामलों में व्यक्ति पूरी तरह निराशा के अंधकार में डूब जाता है, जिससे समाज में आत्महत्या जैसी बेहद दुखद घटनाएं बढ़ती हैं।

बचाव और सही कदम के रूप में चिकित्सा क्यों आवश्यक है?

अवसाद कोई कमजोरी या पागलपन नहीं है, बल्कि मस्तिष्क में न्यूरोट्रांसमीटर (जैसे सेरोटोनिन और डोपामाइन) नामक रसायनों के असंतुलन के कारण होता है। इसलिए इसे केवल "मन को बहलाने" से ठीक नहीं किया जा सकता, इसके लिए वैज्ञानिक दृष्टिकोण की जरूरत होती है, उनमें निम्न प्रमुख हैं :

- मनोचिकित्सक से परामर्श: अवसाद के लक्षण दिखने पर बिना झिझक किसी अच्छे डॉक्टर से मिलें। इसके लिए दवाइयाँ और थेरेपी बेहद असरदार होती हैं।
- अपनी बात साझा करना : अपने परिवार या भरोसेमंद दोस्तों से खुलकर बात करें। मन की बात कह देने से दिमाग का बोझ आधा हो जाता है।
- डिजिटल डिटॉक्स: सोशल मीडिया का उपयोग सीमित करें। स्क्रीन के बजाय प्रकृति, किताबों और वास्तविक दोस्तों के साथ समय बिताएं।
- शारीरिक सक्रियता: नियमित योग, ध्यान करना या रोजाना 30 मिनट की सैर ,मस्तिष्क में “खुद अच्छे महसूस” होने वाले हार्मोन को बढ़ाती है, जिससे तनाव कम होता है।

अपने और अपनों के स्वास्थ्य के लिए इलाज से उत्तम है रोकथाम !



मात्रास्पर्शास्तु कौन्तेय शीतोष्णसुखदुःखदाः ।

आगमापायिनोऽनित्यास्तांस्तितिक्षस्व भारत ॥

भगवद्गीता क- अध्याय 2 (सांख्य योग) /श्लोक 14

“ हे कुन्तीपुत्र अर्जुन! सर्दी और गर्मी, तथा सुख और दुःख को देने वाले इन्द्रिय और विषयों के संयोग तो केवल उत्पत्ति-प्रलयशील और अनित्य हैं। हे भारत (अर्जुन)! तुम उनको सहन करो।”

कल्याण गतिविधियां 2025-26

विश्व पुस्तक दिवस समारोह (23.04.25 से 25.04.25) 7वीं मंज़िल पर बुक स्टॉल लगाया गया और लगातार 3 दिनों तक बोलने के लिए 6 वक्ताओं को आमंत्रित किया गया।

11वां अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस (IDY)-तमिलनाडु शारीरिक शिक्षा और खेल विश्वविद्यालय के योग विभाग के प्रोफेसर और विभागाध्यक्ष डॉ. वी. दुरईसामी ने योग पर व्याख्यान दिया और ध्यान सत्र का 20.06.25 को संचालन किया।

एस ए आइ अल की परिसर बिक्री- भारत सरकार की महारत्न कंपनी, स्टील अथॉरिटी ऑफ़ इंडिया लिमिटेड (SAIL) की यूनिट, सलेम स्टील प्लांट ने 11 अगस्त 2025 को सुबह 10:30 बजे से शाम 5:00 बजे तक मंदिर के सामने वाली कार पार्किंग में 304 ग्रेड वाले स्टेनलेस-स्टील के बर्तनों की परिसर बिक्री आयोजित की। इस कार्यालय द्वारा इस तरह का आयोजन पहली बार किया गया था और उन्होंने अपने सभी उत्पादों पर मूल्य सीमा पर 35% की विशेष छूट दी थी।



स्वतंत्रता दिवस के लिए नाटक: स्वतंत्रता दिवस समारोह के हिस्से के तौर पर, 13.08.25 को तीन ऑडिट कार्यालय के 10 कर्मचारियों ने 13 अगस्त, 2025 को दोपहर 1:30 बजे से 2:30 बजे के बीच ऑडिट भवन के 7वीं मंज़िल के मीटिंग हॉल में "एविडेंस" (Evidence) नाम का नाटक पेश किया।



व्यायामशाला: 14.08.25 को ऑडिट भवन के व्यायामशाला का औपचारिक उद्घाटन श्री डी. जयशंकर, प्र म ले (ऑडिट-I) ने श्री के.पी. आनंद, डी जी ए (सी) और श्री आर. तिरुपति वेंकटसामी (प्र म ले (ऑडिट-II) की मौजूदगी में किया। यह व्यायामशाला तीनों ऑडिट कार्यालय के पुरुष और महिला कर्मचारियों के लिए तय समय पर खुला रहता है। कार्यालय में बना यह व्यायामशाला कर्मचारियों की सेहत और भलाई के लिए अपनी तरह की पहली पहल है।



सी पी आर और बी अल एस पर कार्यशाला और प्रशिक्षण: मेडवे ग्रुप ऑफ हॉस्पिटल्स ने 12.09.25 को दोपहर 1.00 बजे से 2.30 बजे तक ऑडिट भवन के 7वीं मंज़िल के मीटिंग हॉल में तीनों लेखापरीक्षा कार्यालयों के सभी अधिकारियों/कर्मचारियों के लाभ के लिए कार्डियक वेलनेस (दिल की सेहत) पर एक मुफ्त कार्यशाला और प्रशिक्षण सत्र आयोजित की। इस कार्यशाला और प्रशिक्षण से स्टाफ सदस्यों को इन चीज़ों के बारे में समझने में मदद मिली: -(i) जान बचाने वाली जॉर्चें (ii) कार्डियोपल्मोनरी रिससिटेशन (CPR) का इस्तेमाल और उसे देने का तरीका (iii) दिल की अच्छी सेहत बनाए रखने के लिए पेशेवर सलाह और (iv) बेसिक लाइफ सपोर्ट (BLS) ताकि आम तौर पर होने वाली मेडिकल इमरजेंसी को समझा और संभाला जा सके।

एक्यूंपक्वर जागरूकता और वेलनेस शिबीर : 04.11.2025 को ऑडिट भवन के 7वीं मंज़िल के मीटिंग हॉल में सुबह 10.30 बजे से शाम 5.00 बजे तक एक मुफ्त एक्यूंपक्वर जागरूकता और स्वास्थ्य शिबीर आयोजित किया गया। यह शिबीर जाने-माने एक्यूंपक्वरिस्ट प्रो. डॉ. ए. विवेकानंदन (MD(Acu), Ph.D) और उनके सीनियर एक्यूंपक्वर प्रैक्टिशनर्स की टीम ने आयोजित किया था। कुल 111 अधिकारियों और कर्मचारियों ने इस शिबीर में हिस्सा लिया और इसका लाभ उठाया।



ऑडिट दिवस 2025: ऑडिट दिवस सप्ताह 2025, 20.11.25 से 01.12.25 तक मनाया जा रहा है। चेन्नई में सभी भा ले प व ले वि कार्यालयों के अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए ऑडिट सप्ताह के दौरान निम्नलिखित कार्यक्रम आयोजित किए गए। 20.11.25 को म ले (ले व हक), चेन्नई के कार्यालय के ए जी ओ आर सी हॉल में रंगोली प्रतियोगिता आयोजित की गई। 25.11.25 को रेबीज़ पर जागरूकता कार्यक्रम और 'पट्टिमंड्रम' (बहस/चर्चा कार्यक्रम) आयोजित किया गया।

मानसिक स्वास्थ्य जागरूकता कैप: ऑडिट भवन के 7वीं मंज़िल के मीटिंग हॉल में 17.12.25 और 18.12.25 को दोपहर 1:30 बजे से शाम 4:00 बजे तक मानसिक स्वास्थ्य जागरूकता कैप आयोजित किया गया। यह कैप चेन्नई की कंपनी "द माइंड एंड कंपनी प्राइवेट

लिमिटेड" और उसकी टीम ने आयोजित किया था। कुल 111 अधिकारियों और कर्मचारियों ने इस कैंप में हिस्सा लिया और इससे लाभ उठाया। दो दिनों तक चले दोपहर के इन दो सेशन से अधिकारियों को तनाव कम करने और भावनाओं, विचारों, व्यवहार और मानसिक स्वास्थ्य से जुड़े अन्य विषयों को समझने में मदद मिली।



कोटेक्स परिसर बिक्री: त्योहारों के मौसम को देखते हुए, प्र म ले (ऑडिट-I) ने श्री के.पी. आनंद, डी जी ए (सी) और श्री आर. तिरुपति वेंकटसामी (प्र म ले (ऑडिट-II), प्र म ले (ले & ह) और आर सी बी व के आइ, चेन्नई के कार्यालयों के कर्मचारियों के फ्रायदे के लिए, इस कार्यालय ने प्र म ले (ले & ह) के कार्यालय में खुले ऑडिटोरियम में 30.12.25 और 31.12.25 को सुबह 11.00 बजे से शाम 5.00 बजे तक दो दिनों के लिए कोटेक्स के उत्पादों की एक परिसर बिक्री आयोजित की। कर्मचारियों ने इस पर बहुत अच्छा प्रतिक्रिया मिली।

आविन पार्लर: 1 जनवरी 2026 को शिवशंकरन रोड की ओर स्थित ऑडिट कार्यालय के परिसर में, तीनों कार्यालय के कार्यालय प्रमुखों ने मिलकर आविन पार्लर का उद्घाटन किया। यह पहल कार्यालय प्रबंधन और कल्याण अनुभागों की मिली-जुली कोशिश थी। यह पार्लर परिसर के अधिकारियों के लिए अच्छे गुण के कई तरह के डेयरी उत्पाद और पेय उपलब्ध कराता है।



भा ले प व ले वि फुटबॉल टूर्नामेंट: भा ले प व ले वि साउथ जोन फुटबॉल टूर्नामेंट 2025-26 का आयोजन प्र म ले (ऑडिट-I) के कार्यालय द्वारा किया गया था, जिन्हें इस टूर्नामेंट का संयोजक चुना गया था। यह टूर्नामेंट 24.02.2026 से 26.02.2026 तक चेन्नई के पेरियामेट स्थित जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम में आयोजित किया गया था।



भा ले प व ले वि बैडमिंटन टूर्नामेंट: भा ले प व ले वि साउथ ज़ोन बैडमिंटन टूर्नामेंट 2025-26 का आयोजन प्र म ले (ऑडिट-I) के कार्यालय द्वारा किया गया था, जिन्हें इस टूर्नामेंट का संयोजक चुना गया था। यह टूर्नामेंट 02.03.26 से 04.03.26 तक चेन्नई के वेलाचेरी में एस डी ए टी इंडोर स्टेडियम के ए जी बी कॉम्प्लेक्स में आयोजित किया गया था।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस 2026:

1. 24.03.26 से 27.03.26 2. 24.03.26 से 26.03.26 तक 5 खेल हुए।



2. सुश्री स्वप्ना नायर, (ट्रांसफॉर्मेशन कोच/कॉर्पोरेट ट्रेनर/साइकोथेरेपिस्ट) का भाषण।



3. प्र म ले (लेखापरीक्षा) स्टाफ सदस्यों का नृत्य।



आपके पत्र

संख्या/हिंदीअनुभाग/राज्य हिंदी परिषद/2025/26/178

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा
(अवरसंरचना), नई दिल्ली
चुलीय तल, ए-विंग, इन्द्रप्रस्थ भवन,
इन्द्रप्रस्थ एस्टेट, नई दिल्ली-110002



OFFICE OF THE DIRECTOR GENERAL OF
AUDIT (INFRASTRUCTURE), NEW DELHI
3rd Floor, A-Wing, Indraprastha Bhawan,
I.P. Estate, New Delhi-110002

दिनांक/DATE 21-05-2026

सेवा में

सहायक निदेशक (रा.भा.)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-1)
तमिलनाडु, "ऑडिट भवन" 361,
तेनाम्पेट, चेन्नई - 600018

विषय: हिंदी गृह पत्रिका "सुमन" के 32वें अंक के प्रेषण के संबंध में।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित राजभाषा हिंदी को समर्पित पत्रिका "सुमन" के 32वें अंक की ई-प्रति संप्रत्यक्ष प्राप्त हुई। पत्रिका का अवलोकन करने के पश्चात इसके कवचत्मक स्वरूप और सरगमिंत समग्रता ने अत्यंत प्रभावित किया है।

पत्रिका का सुवर्ण, अतिरिक्त आकर्षण तथा स्वांगमय न केवल आकर्षक है, बल्कि इसकी उत्तम गुणवत्ता का परिचायक भी है। इसमें संकलित समस्त रचनाएँ अत्यंत जानकारीपूर्ण एवं पठनीय हैं, जो राजभाषा की संस्कृति और मौलिकता को दर्शाती हैं। विशेष रूप से, पत्रिका की सरल भाषा, संतुलित प्रस्तुति और सुव्यवस्थित संपादन इसकी पठनीयता में खास जोड़ लगा रहे हैं। कार्यालयीन गतिविधियों के जीवंत चित्रों ने पत्रिका के कलेवर को और भी गौरवमान बना दिया है।

इस उत्कृष्ट संकलन एवं संपादन के लिए संपादक-मंडल की कुशलता सराहनीय है। पत्रिका के उत्तरोत्तर विकास और उच्चतम भविष्य हेतु "संवाद" परिवार की ओर से हार्दिक धन्यवाद एवं शुभकामनाएँ।

भवदीया,
सहायक निदेशक (रा.भा.)
राजभाषा अनुभाग

CPR -
2/6/26

Phone: 011-23378473

E-mail: pda

हि.क./हिंदीअनुभाग/संख्या/2025-26/178/2025

1/1174904/2025



कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)अनुभाग,
बुकींग-160017
OFFICE OF THE
PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT) PUNJAB,
CHANDIGARH-160017
फोन : 0172-2783168, फैक्स 0172-2703149
Email: agapunjab@cacg.gov.in

संख्या-स.भा.अनु./सं.प./90/पत्रिका-पावती/2025-26/178 दिनांक:27-10-2025

सेवा में

सहायक निदेशक(राजभाषा)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-1) तमिलनाडु
चेन्नई-600018

विषय:- हिंदी पत्रिका "सुमन" के 32वें अंक की संपादन।

महोदय,

आपके कार्यालय से प्रकाशित पत्रिका "सुमन" के 32वें अंक की प्रति प्राप्त हुई, तदर्थ धन्यवाद। पत्रिका में सम्मिलित सभी रचनाएँ सुवर्ण, बोधगम्य तथा चर्कोटि की हैं विशेषकर श्री रवि कुमार की "राष्ट्रिय शिक्षा नीति 2020: एक परिवर्तनकारी कदम", श्री शैलेंद्र कुमार की "वृक्ष: हमारे भगवान", श्री शैलेंद्र कुमार द्वारा रचना "लक्ष्य के प्रति समर्पण", श्री मुकुंद माधव भारती की लेख "भक्त की गरिमा" आदि।

पत्रिका के रचनाकारों एवं संपादक मंडल को सफल संपादन तथा प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई। पत्रिका के निरंतर उच्चतम भविष्य हेतु शुभकामनाएँ।

भवदीया

EKTA
सहायक निदेशक (राजभाषा)

CPR - 38
29/10/26

may be filed in 14-03
Ardu
29/10

Digitally signed by
Ekta
Date: 27-10-2025
10:01:29



प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) का कार्यालय, झारखण्ड, राँची
Office of the Principal Accountant General (Audit), Jharkhand
Ranchi

संख्या स.भा.अनु./सं.प./90/पत्रिका-पावती/2025-26/178 दिनांक:12-11

सेवा में,

सहायक निदेशक (रा.भा.)

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-1) तमिलनाडु,

ऑडिट भवन, चेन्नई- 600 018

विषय: हिंदी गृह पत्रिका "सुमन" के 32वें अंक की ई-प्रति की पावती का प्रेषण के संबंध में।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका "सुमन" के 32वें अंक की ई-प्रति की प्राप्ति हुई है। धन्यवाद!

पत्रिका का मुख और आंतरिक पृष्ठ बहुत ही सुंदर और आकर्षक हैं एवं मुद्रण कार्य उच्च स्तरीय है। साथ ही, पत्रिका में संकलित सभी रचनाएँ रोचक एवं जानकारीपूर्ण प्रकृति की हैं, विशेषकर श्री रवि कुमार द्वारा लिखित लेख "राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020: एक परिवर्तनकारी कदम", श्री अनुज कुमार पंडित की "वृक्ष: हमारे भगवान", श्री शैलेंद्र कुमार द्वारा रचना "लक्ष्य के प्रति समर्पण", श्री मुकुंद माधव भारती की लेख "भक्त की गरिमा" आदि।

पत्रिका के सफल संपादन हेतु संपादक मंडल को हार्दिक धन्यवाद तथा पत्रिका के उच्चतम भविष्य हेतु शुभकामनाएँ।

भवदीया,

सहायक निदेशक (रा.भा.)

दूरभाष/Telephone: 0651-2411670/2413690 फैक्स/Fax: 0651-2412517/2413701 ई-मेल/e-mail: agajharkhand@cacg.gov.in

CPR - 41
14/10/26



कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा),
त्रिपुरा, कुंजवन, अगरतला- 799 006

संख्या: हिंदी अनुभाग/ पत्रिका प्रतिक्रिया/2024-25/204

दिनांक: 23/10/2025

सेवा में,

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा - I)

लेखापरीक्षा भवन, 361, अण्णा साहेब, तेनाम्पेट,

चेन्नई, तमिलनाडु,

पिन - 600018

विषय: पत्रिका के 32 वॉ अंक की प्राप्ति पर प्रतिक्रिया के संबंध में।

महोदय महोदय,

उपरोक्त विषयवर्तमान उल्लेखनीय है कि आपके द्वारा प्रकाशित हिंदी गृह-पत्रिका "सुमन" की प्रति प्राप्त हुई है जिसे हम सहर्ष स्वीकार करते हैं। पत्रिका की साज-सज्जा और विन्यास अत्यंत आकर्षक बन पड़ा है जिसके लिए आपको साधुवाद। पत्रिका में सम्मिलित समस्त रचनाएँ अत्यंत जानकारीपूर्ण, प्रेरक और समयानुकूल तथा प्रासंगिक हैं।

आगे, आपसे यही आशा करते हैं कि आप इसी प्रकार इस पत्रिका का प्रकाशन निरंतर जारी रखेंगे और राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार और बढ़ावा देने में अपनी महती भूमिका द्वारा सदैव सभी को अभिप्रेरित भी करते रहेंगे। इन्हीं कामनाओं के साथ संपादक मण्डल सहित समस्त पत्रिका परिवार को धन्यवाद एवं बहुत-बहुत बधाई।

सादर, धन्यवाद !

भवदीया,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशासन)



